पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2020-2022

ओ३म्

शृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२२, अंकः-८, फरवरी, सन्-२०२०, सं०-२०७६ वि०, दयानंदाब्द १९५, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,१२०; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

ऋषिबोध पर्व पर विशेष

महाशिवरात्रि को उपजी प्रश्नाकुलता ने शुरू की 'मूलशंकर से 'दयानन्द' हो जाने की प्रक्रिया

-विष्णु प्रभाकर-

वर्ष सन् १८३७ : स्थान-गुजरात के काठियावाड़ सम्भाग में मोरवी राज्य के अन्तर्गत ऐ छोटा-सा गाँव 'टंकारा'। टंकारा में एक शिव मन्दिर। शिवरात्रि का पवित्र त्योहार। रात्रि जागरण और उपवास का व्रत लिये शिवभक्तों से भरे मन्दिर में गूँजती शिवस्तुति...

रात बीतती जा रही है। धीरे-धीरे भक्त ऊँघने और सोने लगते हैं लेकिन चौदह वर्ष का एक किशोर अभी भी जाग रहा है। उसने सुन रखा था कि सो जाने पर व्रत का फल नहीं मिलता। इसलिए वह बार-बार आँखों पर जल के छींटे मारता रहता है लेकिन तभी वह देखता है कि उसके पिता भी सो गये हैं।

पिता जिन्होंने माँ के बार-बार मना करने पर उसे विवश कर दिया था कि वह शिवरात्रि का निर्जल व्रत रखे और रात्रि जागरण करे। उन्होंने उसे चौदह वर्ष की आयु में पार्थिव पूजन करने पर विवश कर दिया था। वे ही पिता स्वयं सो गये। पुजारी भी सो गये। भक्त भी सो गये...

और तभी एक घटना घटी। एक *छोटी-सी चुहिया कहीं से आयी* और शिवलिंग पर चढ़कर प्रसाद को खाने लगी। यह देखकर किशोर हतप्रभ रह गया। एक साधारण-सी चुहिया सर्व शक्तिमान शिव की मूर्ति पर चढ़कर प्रसाद खावे। क्या यह वही महादेव है जिकी कथा मैंने सुनी है या कोई और? वह तो मनुष्य की तरह एक देवता है। वह बैल पर चढ़ता है, चलता-फिरता है, खाता-पीता है, त्रिशूल हाथ में रखता है, डमरू बजाता है, वर देता है, श्राप देता है और कैलाश का मालिक है...

बहुत देर तक ये प्रश्न उसके निर्दोष मन में उमड़ते-घुमड़ते रहे पर उसे उत्तर नहीं मिला। वह किसी निश्चय पर नहीं पहुँच पाया। आखिर उसने अपने पिता को जगाया। वह नींद में थे। कुछ क्रोध में पूछा, "क्या है?"

किशोर ने कहा, "आपने जिस महादेव की कथा सुनाई है वह तो चेतन है, लेकिन इस महादेव के ऊपर तो चुहिया चढ़ रही है। चेतन महादेव अपने ऊपर चुहिया को क्यों चढ़ने देगा?"

पिता नींद के कारण खीज तो रहे थे पर उन्होंने किशोर को समझाते हुए कहा, "असली महादेव तो कैलाश पर रहते हैं। कलियुग में उनके दर्शन नहीं होते। इसलिए हम उनकी मूर्ति बनाकर उनका आह्वान करते हैं, उनकी पूजा करते हैं। पाषाण की मूर्ति बनाकर और उसमें सच्चे शिव की भावना रखकर पूजा करने से कैलाश के शिव प्रसन्न हो जाते हैं।"

पिता फिर सो गये। किशोर की समझ में कुछ आया, कुछ नहीं आया। पर उसे लगा यह तो केवल पत्थर है, यह शिव नहीं हो सकता, पर जो सच्चा शिव है वह क्यों नहीं आ सकता। क्यों...

अब कौन दे उसके 'क्यों' का उत्तर। उसी आस्था डगमगा गयी। उसके प्रश्नाकुल मन के भीतर विद्रोह का पहला अंकुर फूटा। उसे भूख भी लग रही थी। उसने पिता से कहा, "मैं घर जाऊँगा।"

नींद में ही पिता बोले, "सिपाही को साथ लेकर चला जा। लेकिन भोजन हरगिज मत करना।"

किशोर घर पहुँचा। उसे अब पिता की चिन्ता नहीं थी। उसने माँ से कहा, "मुझे भूख लगी है।"

माँ बोली, "मैंने तो पहले ही कहा था तू भूखा नहीं रह सकेगा, पर तेरे पिता नहीं माने।"

और उन्होंने किशोर को खाने के लिए मिठाई दी। कहा, "पिता से मत कहना।"

लेकिन दूसरे दिन सवेरे पिता को सब कुछ पता लग गया। वे क्रुद्ध हो उठे, बोले, "तूने यह बहुत बुरा किया।"

किशोर ने दृढ़ता से पिता की ओर देखा। मन में निरन्तर तुमुलनाद मचा हुआ था। प्रश्न उमड़-घुमड़ रहे थे। जी में आया कि कह दे, "जब यह कथा का महादेव नहीं हो तो मैं इसकी पूजा क्यों करूँ? मैं उसी सच्चे शिव के दर्शन करूँगा जो कैलाश का स्वामी है। लेकिन वह यह सब कह नहीं सका। इतना ही बोला, "मुझे पढ़ने से अवकाश नहीं मिलता। पूजा कैसे करूँ...?"

पिता सन्तुष्ट नहीं हुए पर माँ और चाचा आदि के समझाने पर शान्त हो गये। लेकिन किशोर के अन्तर में विद्रोह का अंकुर जो फूट आया था वह उसे कुछ करने को उकसाने लगा और वह उचित समय की राह देखने लगा।

कौन था यह किशोर?

कोई कल्पना कर सकता था उस दिन कि कालान्तर में यही किशोर उन्नीसवीं सदी के एक प्रखर और जुझारू समाज-सुधारक के रूप में विश्व विख्यात होगा। चारों ओर फैले पाखण्ड, दम्भ, और अन्धविश्वासों पर घन की चोट करता हुआ भारत को वैज्ञानिक युग में ले जाने वाली राह दिखायेगा।

कौन था वह किशोर और कौन था वह प्रखर और जुझारू सुधारक? किशोर का नाम था 'मूलशंकर' और सुधारक थे स्वामी दयानन्द सरस्वती। मूलशंकर से दयानन्द हो जाने तक की प्रक्रिया में कहीं विसंगति नहीं है। जो प्रश्नाकुलता किसी को महानता के मार्ग पर ले जाती है वह मूलशंकर में प्रारम्भ से ही विद्यमान थी। वही उसे निरन्तर बने-बनाये मार्ग को त्यागने और नये की खोज के लिए उकसाती रही। वही उसे सच्चे शिव और सत्य की तलाश में आगे और आगे धकेलती रही। उसने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा लेकिन साथ ही अतीत में जो शुभ, सुन्दर और गतिमय था उसी को आधार बनाकर नये और समृद्ध भविष्य का निर्माण किया। उसने बताना चाहा कि अपने धरती से विच्छिन्न होकर हम कहीं नहीं पहुँच सकते, वैसे ही जैसे जड़ अपनी मिट्टी, अपनी हवा से अपने को काट लेगी तो वृक्ष पनप ही नहीं सकेगा।

बालक मूलजी (दयाराम भी) का जन्म सन् १८२४ (भाद्रपद कृष्णा ९, गुरुवार, सम्वत्-१८८१) में गुजरात प्रान्त के काठियावाड़ सम्भाग में मोरवी राज्य (अब जिला राजकोट) के एक छोटे-से गाँव, टंकारा में एक समृद्ध सनातनी परिवार में हुआ था। पिता का नाम करसन जी लाल जी तिवारी था। वे औदिच्य ब्राह्मण और शैवमत के कट्टर अनुयायी थे। वे राज्य के एक अधिकारी जमेदार (बहीवटदार) भी थे और साहूकार भी। बालक मूलशंकर कभी स्कूल नहीं गये। उन दिनों यह सम्भव भी नहीं था। पिता की देख-रेख में उन्होंने संस्कृत और धर्म-शास्त्रों का पठन-पाठन किया। स्वामीजी के ही शब्दों में,

"मैंने पाँचवें वर्ष में देवनागरी अक्षर पढ़ने का आरम्भ किया। मुझकों कुल की रीति की शिक्षा भी माता-पिता

आदि दिया करते थे। बहुत-से धर्म-शास्त्रादि के श्लोक और सूत्रादि भी कण्ठस्थ कराया करते थे। फिर आठवें वर्ष मेरा यज्ञोपवीत कराके गायत्री सन्ध्या और उसकी क्रिया भी सिखा दी गयी थी। और मुझकों यजुर्वेद संहिता का

(शेष पृष्ठ 3 पर)

विनय पीयूष

ब्रह्म हूँ मैं!

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
यो ऽसावादित्ये पुरुषः सो ऽसावहम्।
ओ३म् खं ब्रह्म।। *(यजुर्वेद 40/17)*

ब्रह्म हूँ मैं,
आकाशवत
सर्वत्र हूँ मैं व्याप्त!

सत्य का मुख आच्छादित है
सुनहरे पात्र से।
आदित्य में जो पुरुष है
वस्तुतः
मैं ही हूँ वह भी।

ओम हूँ मैं,
आकाशवत सर्वत्र हूँ मैं व्याप्त।

ब्रह्म हूँ मैं!

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

अन्यों का सुख दुःख

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज का प्रत्येक सूक्ति-वाक्य मंत्रवत् है, और जिस तरह मंत्र को व्याख्या की जरूरत होती है, उसी प्रकार महर्षि के शब्द भी व्याख्या की अपेक्षा रखते हैं। सूक्ष्म पर्यवेक्षण न कर पाने की दशा में सामान्य जन उस ज्ञान राशि से वंचित रहता है, जो महर्षि के मंत्रवत् शब्दों में अन्तर्निहित है। महर्षि जब मनुष्य को पारिभाषित करते हुए कहते हैं कि "मनुष्य उसी को कहना, जो मननशील होकर अन्यों के सुख दुख और लाभ हानि को समझे" तो 'अन्यों' से उनका क्या अभिप्राय है, यह समझ लेना चाहिए। 'अन्यों' शब्द में अखिल भुवन के प्रति करुणा का भाव समाहित है। 'अन्यों' का सामान्यतया अर्थ 'अपने अलावा' 'दूसरों' से होता है किन्तु यहाँ पर 'अन्यों' का अर्थ व्यापक है और इसमें १-मानवजाति २-पशु पक्षी कीट पतंग इत्यादि तथा ३-प्रकृति-वनस्पति, औषधियाँ, शाक, फल फूल, वृक्षावलियां- ये तीन श्रेणी आती हैं।

महर्षि के अनुसार मनुष्य वही है जो सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के बारे में सोचता है, कार्य करता है। महर्षि के स्वयं के जीवन को देखें तो आप अनुभव करेंगे- यदि वे सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के बारे में न सोचते तो योग साधना पूर्ण करने के पश्चात् अर्थात् योग के आठो अंगों पर पूर्ण अधिकार के बाद उनके लिए मुक्ति का द्वार खुला हुआ था- वे महर्षि थे- जिनके मन में यह विचार आया- 'अरे, दयानन्द! क्या हुआ, तूने मुक्ति का द्वार प्राप्त कर लिया किन्तु अभी तेरे देश के करोड़ों मनुष्य पराधीनता और अज्ञान के बंधनों में जकड़े हुए हैं, दुःखी हैं, पीड़ित हैं, शोषित हैं, पददलित हैं और तू मुक्ति के आनन्द का उपयोग करना चाहता है?' दयानन्द इसी लोकोपकार की भावना से पर्वतों की बर्फीली गुफाओं से समतल भूमि पर आये और जन जन के कल्याण में लीन हो गये। यहाँ तक कि वे वीतराग होते हुए भी एक दिन जब उन्होंने एक दीनहीन नारी को अपने मृत शिशु को नदी में प्रवाहित करने हेतु अपने शरीर को ढंकने वाली धोती के आधे भाग से उस मृत शिशु को ढंकते हुए और आधे भाग से अपने शरीर की रक्षा करते देखा- तो उनका हृदय विह्वल हो उठा और 'परहित द्रवहि संत सुपुनीता' की उक्ति को चरितार्थ करते हुए- देश की गरीबी के उन्मूलनार्थ उन्होंने 'गोकरुणानिधि' जैसी जन जन उपयोगी पुस्तक की रचना की और देश का सही मार्गदर्शन कराया। यह थी ऋषि के मानव जाति के प्रति उदात्त चेतना।

यहाँ यह प्रश्न उठता है कि मनुष्य को मनुष्य के कल्याण तक ही सीमित रहना चाहिए- जैसा श्री मैथिलीशरण गुप्त अपनी एक रचना में कहते हैं-

'वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे'

श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' भी अपने 'कुरुक्षेत्र' काव्य के छठे सर्ग में लिखते हैं-

एक नर से दूसरे के बीच का व्यवधान
तोड़ दे जो बस वही ज्ञानी, वही विद्वान्
और मानव भी वही!

महर्षि की दृष्टि में मनुष्य की उपर्युक्त दोनों परिभाषाएँ अपूर्ण हैं, त्रुटिपूर्ण हैं। मनुष्य यदि मनुष्य के ही लिए मरे तो वह मनुष्य कैसे? मनुष्य तो वह है, जो मनुष्य ही नहीं अखिल भुवन के दुख दर्द को समझता हो। स्वामी जी 'गोकरुणानिधि' पुस्तक में मात्र गाय की रक्षा की बात नहीं करते, वे बकरी बकरे ऊँट इत्यादि सभी पशुओं की रक्षा की वकालत करते हैं। सदियों पूर्व राजकुमार सिद्धार्थ का हृदय एक आहत पक्षी को तड़पता देखकर पिघल उठा था और वे पक्षी की रक्षा के लिए उस समय के सर्वोच्च न्यायालय तक पहुँचे और उसको बचाने में सफल हुए तथा आगे चलकर गौतम बुद्ध कहलाये। इसी तरह दयानन्द से गौवंश का विनाश देखा नहीं गया। 'गोकरुणानिधि' के माध्यम से उन्होंने गायों के दुःख दर्द के प्रति जनता को जागरूक किया तथा इस प्रश्न को सर्वोच्च सत्ता तक ले गये। महर्षि के हृदय की पशुओं के प्रति सहानुभूति के लिए आज 'गौकरुणानिधि' का एक एक शब्द साक्षी दे रहा है।

इससे भी आगे बढ़कर प्रकृति पर्यावरण की रक्षा भी मानवता का पवित्र अनुष्ठान है और मनुष्य तथा मनुष्यता की पहचान है। महर्षि तो एक पुष्प को भी कष्ट में अर्थात् उसका दुरुपयोग नहीं देख सकते थे। दानापुर (बिहार) में जब उन्होंने अपने आतिथेय बाबू अनन्तलाल जी को प्रातःकाल उपवन में खिले हुए सुन्दर फूल को तोड़ते हुए देखा तो महर्षि ने कहा- अनन्त बाबू, यह फूल कितनी वायु को सुगंधित करता, आपने इसे तोड़कर इसके नियत कार्य से इसे रोका। आपने यह अच्छा नहीं किया। महर्षि ने यज्ञ विधान के माध्यम से इस धरती को 'सुजलां सुफलां, शस्य श्यामलां' बनाने की योजना प्रस्तुत की थी। 'वायु जल सर्वत्र हों, शुभ गंध को धारण किये' तथा 'फलफूल से लदी हों, औषध आमोघ सारी। हो मोक्ष क्षेमकारी स्वाधीनता हमारी।' जैसी पदावलियों में यही भाव व्यक्त किया गया है। शान्तिपाठ- 'द्यौ शान्तिरन्तरिक्ष शान्ति' के प्रत्येक शब्द में वही कल्याणकामना ध्वनित होती है। आर्य समाज के दस नियमों में से छठा नियम इसी सत्य को प्रकाशित करता है-

"संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना।"

विश्वशान्ति की इसी कामना को लेकर भारतीय ऋषि मुनियों ने भारत में ही नहीं विदेशों में भी जाकर अपने आश्रमों की स्थापना की थी जिसके प्रमाण आज भी भग्नावशेषों और स्मृतियों के रूप में मिलते रहते हैं।

महर्षि द्वारा प्रयुक्त 'अन्य' शब्द भी इसी तरह व्याख्येय है और अपने अन्दर प्रभूत अर्थ संपदा सँभाले हुए है

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-२०२

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में नवम समुल्लास का अंश

ब्रह्मा विश्वसृजो धर्म्मो महानव्यक्तमेव च।
उत्तमां सात्त्विकीमेतां गतिमाहुर्मनीषिणः॥

जो उत्तम सत्त्वगुण युक्त होके कर्म्म करते हैं वे ब्रह्मा सब वेदों का वेत्ता विश्वसृज् सब सृष्टिक्रम विद्या को जानकर विविध विमानादि यानों को बनानेहारे, धार्मिक सर्वोत्तम बुद्धियुक्त और अव्यक्त के जन्म और प्रकृतिवशित्व सिद्धि को प्राप्त होते हैं।।10।।

इन्द्रियाणां प्रसंगेन धर्मस्यासेवनेन च।
पापान्संयान्ति संसारानविद्वांसो नराधमः॥

जो इन्द्रिय के वश होकर विषयी, धर्म को छोड़कर अधर्म करनेहारे अविद्वान् हैं वे मनुष्यों में नीच जन्म बुरे-बुरे दुःखरूप जन्म को पाते हैं।।11।।

इसी प्रकार सत्त्व, रज और तमोगुण युक्त वेग से जिस-जिस प्रकार का कर्म जीव करता है उस-उस को उसी-उसी प्रकार फल प्राप्त होता है।

जो मुक्त होते हैं वे गुणातीत अर्थात् सब गुणों के स्वभावों में न फस कर महायोगी होके मुक्ति का साधन करें।

त्रिगुण

क्योंकि-

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः॥१॥

तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्॥२॥

ये योगशास्त्र के पातंजल के सूत्र हैं- मनुष्य राजोगुण, तमोगुण युक्त कर्मों

से मन को रोक शुद्ध सत्त्वगुणयुक्त कर्मों से भी मन को रोक, शुद्ध सत्त्वगुणयुक्त हो पश्चात् उसका निरोध कर, एकाग्र अर्थात् एक परमात्मा और धर्मयुक्त कर्म इनके अग्रभाग में चित्त का ठहरा रखना निरुद्ध अर्थात् सब ओर से मन की वृत्ति को रोकना।।1।।

जब चित्त एकाग्र और निरुद्ध होता है तब सब के द्रष्टा ईश्वर के स्वरूप में जीवात्मा की स्थिति होती है।।2।। इत्यादि साधन मुक्ति के लिए करे। और-

अथ त्रिविध दुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्त पुरुषार्थः॥

यह सांख्य का सूत्र है-जो आध्यात्मिक अर्थात् शरीर सम्बन्धी पीड़ा, अधिभौतिक जो दूसरे प्राणियों से दुःखित होना, अधिदैविक जो अतिवृष्टि, अतिताप, अतिशीत, मन इन्द्रियों की चंचलता से होता है; इस त्रिविध दुःख को छुड़ा कर मुक्ति पाना अत्यन्त पुरुषार्थ है। इसके आगे आचार अनाचार और भक्ष्याभक्ष्य का विषय लिखेंगे।।9।।

इति श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिकृते
सत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविभूषिते
विद्याऽविद्याबन्धमोक्षविषये
नवमः समुल्लासः
सम्पूर्णः।। ९।।

(क्रमशः)

वेदांजलि

पवित्र गौ का हनन मत करो

□पं.शिव कुमार शास्त्री
पूर्व संसद सदस्य

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट।।

–ऋग्वेद 8/101/15

शब्दार्थ-

मैं **(चिकितुषे)** प्रत्येक बुद्धिमान् व्यक्ति को **(नु प्रवोचम्)** कहे देता हूँ कि **(अनागाम्)** निरपराध **(अदितिम्)** अहन्तव्या **(गाम्)** गौ को **(मा वधिष्ट)** कभी मत मार [क्योंकि यह] **(रुद्राणां माता)** रुद्र देवों की माता है **(वसूनां दुहिता)** वसु देवों की कन्या है और **(आदित्यानां स्वसा)** आदित्य देवों की बहिन है तथा **(अमृतस्य नाभिः)** अमृतत्व का केन्द्र है। 25 वर्ष तक ब्रह्मचर्य व्रतपूर्वक तप करने वाला वसु, 36 वर्ष तक इसी प्रकार साधना करने वालों को रुद्र और 48 वर्ष तक तप करने वालों को आदित्य कहा जाता है। ये ही सुसंस्कृत समाज के तीन वर्ग हैं और इनके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध दिखाने के लिए पुत्री, बहिन और माता के रूप में गौ को बताया गया है।

व्याख्या-

प्रत्येक विचारशील व्यक्ति को इस मंत्र में एक चेतावनी दी है कि तू अपने जीवन में गौ को कभी मत मार। यह गौ निर्दोष और निरपराध है। यह गौ रुद्रदेवों की माता है, वसुदेवों की कन्या है और यह आदित्यदेवों की बहिन है। इससे भी बढ़कर यह अमरपन का केन्द्र है। तू इसकी रक्षा करके स्वयं अमर हो जाएगा।

वैदिक कोष 'निघण्टु' में परिगणित गौ शब्द के अर्थों में से यहाँ प्रकरणानुसार तीन अर्थ अपेक्षित हैं-प्रथम-वाणी, अन्तरात्मा की पुकार, दूसरा-मातृभूमि, और तीसरा-गौ नामक पशु। इन तीनों की रक्षा करके मनुष्य को अपना, समाज और राष्ट्र का कल्याण करना चाहिए।

सबसे पूर्व अन्तरात्मा की पुकार पर विचार कीजिए। मनुष्य स्वयं ऊँचा उठ रहा है अथवा नीचे गिर रहा है, इसका प्रमाण एक ही है कि वह स्वयं अपनी दृष्टि से जिसे ठीक समझता है, उस पर आचरण कर रहा है अथवा सम्पत्ति के प्रलोभन में और दुनिया की वाहवाही की कोशिश में अन्तरात्मा की अवहेलना कर रहा है। यदि वह आन्तरिक प्रेरणा पर सत्य का मार्ग अपनाता है, तो वह स्वयं अपनी आत्मा में अपार बल और सन्तोष का अनुभव करता है। इस स्थिति में संसार के लोग उसका विरोध भी करते हैं तो इसकी उसे कोई परवाह नहीं होती, क्योंकि उसे निश्चय है कि उसने वही किया है जो उसे करना चाहिए था। यदि आचरण इसके विपरीत है, अर्थात् आत्मा जिसको अनुचित समझ रही है उसी मार्ग को किसी प्रलोभन में अपनाता है तो फिर वह संसार की नज़र में चाहे कुछ बन जाय, किन्तु स्वयं अपनी दृष्टि में वह पतित हो गया। ऐसा व्यक्ति संसार के महात्मा कहने से महात्मा नहीं बनेगा। हमें अपने गन्तव्य मार्ग का निश्चय लोगों की इच्छा पर न छोड़कर अपनी आत्मा की पुकार पर छोड़ना चाहिए।

दूसरी गौ मातृभूमि है। इस माता का ऋण भी हम पर बहुत बड़ा है। हमारे शरीर का कण-कण इसी से बना है। संसार में आने पर हमारी जन्मदात्री माता तो प्रसव-वेदना से अपनी सुध-बुध खोए हुई थी, उस समय सर्वप्रथम इसी भूमि माता ने हमें अपनी छाती से लगाया। यही जीवन-भर अन्न, फल, औषध तथा अनेक पोष्य रसों से हमारे शरीर की रक्षा करती है। अन्त में हमारे शरीर से जीवात्मा पृथक होने पर, जब कि सब सांसारिक जनों से सम्बन्ध विच्छिन्न हो जाता है, तब भी यह मातृभूमि ही है, जो हमारे शरीर की मिट्टी को मुट्ठी भर राख के रूप में अपनी छाती से चिपटा लेती है। इसीलिए वेदमाता ने भी मातृभूमि के इस गौरव को ध्यान में रखकर, हमें उपदेश दिया-

'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।'

(अथर्व. 12/1/12)

'भूमि मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूँ।'

'वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम।'

(अथर्व. 12/1)

'हम तेरे सम्मान की रक्षा के लिए सर्वस्व निछावर करने को उद्यत रहें।' पूर्वकाल में मातृभूमि के लिए यही निष्ठा विद्यमान थी। लम्बी दासता और उचित शिक्षा के अभाव में खेद है कि वर्तमान पीढ़ी में यह भाव-प्रवणता नहीं है।

अब तीसरे नम्बर पर गो-पशु, जिसके असाधारण गुणों के कारण कृतज्ञता और श्रद्धा की भावना से हमारी संस्कृति में उसे गोमाता कहा जाता है। प्रस्तुत मंत्र में न केवल उसे माता कहा गया है, अपितु उसे पुत्री और भगिनी भी कहा गया है, अर्थात् जो हमारे भावनात्मक और पवित्र पारिवारिक सम्बन्ध माता, पुत्री और बहिन के साथ हैं, वे ही इस गौ के साथ हैं। वैदिक संस्कृति में उपयोगिता की दृष्टि से गौ और घोड़े का महत्त्व मनुष्य के बराबर किया आँका गया है। इसीलिए अथर्ववेद में उपदेश है कि-

यदि नो गां हंसि यद्यश्व यदि पूरुषम्।
तं त्वा सीसेन विध्यामो यता नो सोऽवीरहा।।

(अथर्व. 1/16/4)

'जो दुष्ट हमारे गो-धन, अश्व-धन और मनुष्यों का विनाश करता है, उसे हमें सीसे से (गोली से) बींध देना चाहिए। यहाँ सबसे पूर्व गौ को ही गिनाया गया है।

वस्तुतः प्रकृति ने पृथिवी पर गौ के रूप में सैकड़ों धाराओंवाला झरना खोल दिया है। पृथिवी से झरनेवाले निर्झर एक समय आता है कि सूख जाते हैं, इसके अतिरिक्त इन झरनों में सम्पूर्ण वर्ष एक जैसा पानी नहीं झरता; वर्षा ऋतु और उसके कुछ समय बाद तक अधिक जल निकलता है और ग्रीष्म ऋतु में कम हो जाता है। इस पृथिवी के निर्झर को एक स्थान से दूसरे स्थान पर नहीं ले जा सकते, किन्तु गौरूपी ऐसा विलक्षण झरना है इसकी धारा कभी सूखती नहीं, अपितु सन्ततिक्रम से सदा बनी रहती है। इसकी धारा उत्तरोत्तर बढ़ती है, कभी कम नहीं होती और इस झरने को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जा सकते हैं।

(श्रुति सौरभ से साभार)

दयानन्द चरितामृतम्

-डॉ.गणेश दत्त शर्मा-

(प्रथमः सर्गः)

छन्द २५-२७

अनुव्रतस्तातवरं महाशयम्,
महापदस्थं च तथापि धार्मिकम्।
तथा दृढ़ निश्चितवान् हि शंकरम्,
प्रसादितुं सुष्ठु च मूलशंकरः।।

महान् हृदय वाले तथा ऊँचे पद पर स्थित होते हुए भी धार्मिक अपने पूज्य (पिता) का अनुकरण करने वाले मूलशंकर ने तब भगवान् शंकर को भलीभाँति प्रसन्न करने का दृढ़ निश्चय किया।

महोत्सवेऽसौ शिवरात्रिपर्वणि,
व्रतोपवासं च दधार भक्तिमान्।
जगाम सार्धं जनकेन नोदितम्,
तथा निशाजागरणाय मंदिरम्।।

उस भक्तिमान् मूलशंकर ने शिवरात्रि पर्व पर हुए महोत्सव में व्रत व उपवास को धारण किया तथा पिता के द्वारा प्रेरित होकर वह रात्रि जागरण के लिए शिवमंदिर में भी गया।

शिवालयं प्रेक्षितवान् व्रतीवरः,
सुधावलिप्तं च तथा सुनिर्मलम्।
स मध्यभागे शिवमूर्तिमंडितम्,
नमः शिवायेति च गुंजितं भृशम्।।

उस श्रेष्ठ व्रती (मूलशंकर) ने कलई से पुते हुए, अत्यन्त निर्मल तथा मध्यभाग में शिवमूर्ति से मंडित एवं 'नमः शिवाय' की ध्वनि से अत्यन्त गुंजित शिवमंदिर को देखा। *('दयानन्द चरितामृतम्' से साभार, क्रमशः)*

-साहिबाबाद, गाजियाबाद-२०१००५

स्मृति-वातायन

'रामजी' से 'आर्यभिक्षु' बनने की अन्तर्कथा

डॉ० वेद प्रकाश आर्य-

जुलाई १९५७, जब पहली बार मैं श्री रामजी प्रसाद गुप्त (मुगलसराय), तत्कालीन कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र., ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से उनके सभा भवन आवास पर मिला तो मेरे हाथों में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी अभेदानन्द जी सरस्वती द्वारा लिखित संस्तुति पत्र था। पत्र में श्रद्धेय स्वामी जी ने मेरे आर्य कुमार सभा, आर्य वीर दल, आर्य समाज से सम्बन्धी कार्यों का संकेत करके लिखा था- 'प्रिय रामजी, इस आर्य युवक को कोई ऐसा सेवाकार्य दें जिससे यह अपन विश्वविद्यालय की पढ़ाई के साथ साथ अर्थोपार्जन भी कर सके और आत्मनिर्भर बने।' उस समय मेरी आयु महज १७ वर्ष की थी तथापि आर्य सामाजिक क्षेत्रों में मेरा नाम चर्चित हो चला था। १९५७ में मेरा विवाह भी हो चुका था और मैं अपनी पढ़ाई आत्मनिर्भर होकर पूरी करना चाहता था क्योंकि अभी छोटी बहन का विवाह होना था, अतः पिताजी पर मैं अपना व्ययभार नहीं डालना चाहता था।

गुप्त जी का यह प्रथम दर्शन और प्रथम साक्षात्कार इतना प्रभावोत्पादक सिद्ध हुआ कि वह आज भी मेरे चित्त पर ज्यों का त्यों अंकित है। हल्का श्याम वर्ण, प्रशस्त ललाट, एकाग्रतासूचक भृकुटिविलास, मर्मभेदिनी तीक्ष्ण दृष्टि, हँसमुख चमकता चेहरा, हल्की दाढ़ी, बिखरे केश, खादी की लुंगी, कुर्ता, सदरी, पैरों में गोरक्षक जूते, शिथिलता का नाम निशान नहीं, चुस्तदुरुस्त स्वतः स्फूर्त श्री रामजी प्रसाद गुप्त उन दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के निर्वाचित कोषाध्यक्ष थे। गुप्त जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा को व्यवस्थित रूप देना शुरू कर दिया था। नित्य प्रातः सायं दैनिक अग्निहोत्र होने लगा था, जिसमें सभी कर्मचारियों की उपस्थिति अनिवार्य थी। किसी को भी छूट नहीं थी। अनुशासन अत्यधिक सुदृढ़ था। ठीक समय से यज्ञ प्रतिदिन होता था और ठीक समय पर समाप्त होता था। सफाई स्वच्छता पर विशेष बल दिया जा रहा था। गमले, पौधे, क्यारियाँ व्यवस्थित कर दी गईं। बदहाल आर्य प्रतिनिधि सभा चमकने लगी थी। गुप्त जी जिस क्वार्टर में रहते थे- वह सबसे पहला था। उनके कक्ष में प्रवेश से पूर्व जूते बाहर वह भी पंक्तिवद्ध रखे जाते थे। अन्दर प्रवेश करने पर चमकती फर्श, साफ सुथरी दरियां, चौकी पर स्वच्छ चादर, तौलिया, सबकुछ खादी का। डायरी, फाइलें करीने से रखी थीं। उनके कक्ष में 'करत प्रवेश मिटे दुख दाना' की उक्ति चरितार्थ होती थी।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. ने उन्हें आर्य वीर दल विभाग का अधिष्ठाता बनाया था तथा आर्य वीर दल के प्रान्तीय संचालक का कार्यभार उन्हें सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक माननीय ओमप्रकाश पुरुषार्थी ने सौंप दिया था। सभा के मंत्री व प्रधान के अनुपस्थित रहने के कारण सभा की कार्यप्रणाली काफी अव्यवस्थित हो चली थी; जिसे पटरी पर लाने का कार्य रामजी प्रसाद गुप्त को पूरा करना था। उन दिनों सभा का वैभव समुन्नत था। उपदेश विभाग में लगभग बीस पचीस उपदेशक, महोपदेशक, प्रचारक, भजनोपदेशक वैतनिक कार्यरत थे। इनमें श्री ओम प्रकाश शास्त्री खतौली, पं.रुद्र दत्त शास्त्री, श्री सत्यमित्र शास्त्री जैसे ख्यातिलब्ध वक्ताओं, विद्वानों के नाम शामिल थे। ठा.श्रवण सिंह, ठा.गजराज सिंह, श्री धर्मराज सिंह, श्री धर्मदत्त आनन्द, भद्रपाल जैसे जाने माने प्रचारक सभा के अन्तर्गत कार्यरत थे।

मेरा गुप्त जी से कोई परिचय नहीं था, इससे [illegible] उनके बारे में सुन रखा था कि अत्यधिक अनुशासनप्रिय हैं। कक्ष में प्रवेश करने पर मैं स्वयं बहुत भयभीत था, आशंकित था- कहीं कोई गलती न हो जाये। धड़कते हृदय से अन्दर जाकर मैंने अपने विनम्र स्वभावानुसार उनके चरण स्पर्श किये तथा दोनों हाथ जोड़कर 'नमस्ते' अभिवादन किया और पूज्य स्वामी अभेदानन्द जी महाराज का हस्तलिखित पत्र दिया। पत्र पढ़कर बिना किसी असमंजस या पूछताछ के गुप्त जी ने कहा- 'अच्छा, सप्ताह में एक दिन बृहस्पतिवार को आप कार्यालय में आ जाया करो, मेरी जो भी डाक आती है, उसका उत्तर लिख दिया करो। आवश्यकतानुसार मुझसे पूछ लेना, अन्यथा स्वविवेक का प्रयोग करना।' इतना कहकर गुप्त जी ने पारिश्रमिक धनराशि भी बताई जो मेरे लिए सन्तोष जनक थी। एक ग्राम्य क्षेत्र के आर्य नवयुवक को जो लखनऊ जैसे बड़े महानगर में स्वयं के लिए एक आधार खोज रहा था- इस प्रकार का व्यवहार और उत्तर निश्चय ही अप्रत्याशित था। मेरा हृदय गर्व हर्ष के आन्तरिक उद्वेग से आलोकित हो उठा था।

(शेष अगले अंक में...)

सत्संग

जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा :

क्या यह आवश्यक है कि जो इस जन्म में नर (पुरुष) है वह अगले जन्मों में भी पुरुष का ही शरीर प्राप्त करता रहे और जो इस जन्म में नारी (स्त्री) है, वह अगले जन्मों में भी नारी का ही शरीर प्राप्त करता रहे?

-बी.एल.पाण्डेय, 417/10, नेवाज गंज, चौक, लखनऊ

समाधान :

कदापि नहीं; नर और नारी शरीर की प्राप्ति जन्मान्तर हेतु कोई सार्वकालिक व्यवस्था या नियम नहीं है। इस सम्बन्ध में पुनर्जन्म सम्बन्धी कुछ व्यवस्थाओं की जानकारी हम ब्रह्म विद्या के व्याख्या ग्रंथ उपनिषद से प्राप्त कर सकते हैं। यह सभी व्यवस्थायें यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के मंत्र संख्या-17 'वायुरनिलममृतमथेदं' पर आधारित हैं।

पुनर्जन्म के सम्बन्ध में सबसे प्रामाणिक विवरण उपनिषदें- कठोपनिषद तथा वृहदारण्यक उपनिषद उपलब्ध कराती हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में इन्हीं उपनिषदों का सारांश निहित है-'सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः'. उक्ति इसी तथ्य की ओर इशारा करती है।

कठोपनिषद में आचार्य यम नचिकेता को अगले जन्म के बारे में बतलाते हैं-

योनिमन्ये प्र पद्यन्ते शरीरत्वाय देहिनः
स्थाणुमन्येनुसंयन्ति यथाकर्म यथाश्रुतम्।। (5/17)

'यथाकर्म यथाश्रुतम्'- जिसका जैसा कर्म होता है, जिसका जैसा ज्ञान होता है, कोई किसी जीवन योनि में जाकर शरीर धारण कर लेता है, कोई स्थाणु योनि (वृक्ष इत्यादि) में चला जाता है।

नर और नारी संसार में दो तत्व हैं। इनका समान महत्व है। ब्रह्म नर भी है, नारी भी। (त्वमेव माता च पिता त्वमेव) उपनिषद् भी यही बतलाती है।

यजुर्वेद का चालीसवां अध्याय, मंत्र-17 'वायुरनिलम्' में संसार से प्रस्थान करने वाले जीव के लिए कर्म और 'ओम' का स्मरण करने की बात कही गई है--'ओम् कृतो स्मर कृतं स्मर'। अंतिम समय में किये हुए कर्म और ओम् अर्थात् ज्ञान ही अगले जन्म का निर्धारण करता है। नर और नारी शरीर प्राप्त करने का आधार अंतिम समय की वासनायें होती हैं। नारी तत्व के प्रति अधिक वासना (प्रवृत्ति) नारी शरीर, पुरुष तत्व के प्रति अधिक (प्रवृत्ति) वासना पुरुष शरीर प्राप्त करने का कारण बनता है। ये वासनाएँ संचित कर्मों द्वारा निर्मित होती हैं।

नर और नारी दोनों तत्वों में कोई तात्विक अन्तर नहीं है। विभिन्न जन्मों में इनका विनिमय- अदला बदली होती रहती है। कर्मों की वासना के अनुसार। नारी जीवन भी असीम सुख या दुख का कारण हो सकता है, उसी प्रकार नर का जीवन भी असीम दुख सुख का कारण हो सकता है।

अतः प्रत्येक मानव को कर्म और ज्ञान (ओम्) पर ध्यान केन्द्रित करना श्रेयस्कर है। *(सहायक ग्रंथ-'मृत्यु और परलोक'-महात्मा नारायण स्वामी)*

-सम्पादक

(पृष्ठ 1 का शेष...)

महाशिवरात्रि को..

आरम्भ कराके उसमें से प्रथम रुद्राध्याय पढ़ाया गया था और मेरे कुल में शैव मत था। उसी की शिक्षा भी दिया करते थे और पिता आदि लोग यह भी कहा करते थे कि पार्थिव पूजा अर्थात् मिट्टी का लिंग बनाकर तू पूजा कर। और माता मना करती थी कि यह प्रातःकाल भोजन कर लेता है इससे पूजा नहीं हो सकेगी। पिताजी हठ किया करते थे कि पूजा अवश्य करनी चाहिए क्योंकि कुल की रीति है।...

...तथा कुछ व्याकरण का विषय और वेदों का पाठ-मात्र भी मुझको पढ़ाया करते थे। पिताजी अपने साथ मुझको जहाँ-तहाँ मन्दिर और मेल-मिलापों में ले जाया करते थे और यह भी कहा करते थे कि शिव की उपासना सबसे श्रेष्ठ है।

इस प्रकार चौदहवें वर्ष की अवस्था के आरम्भ तक यजुर्वेद की संहिता सम्पूर्ण और कुछ अन्य वेदों का भी पाठ पूरा हो गया था और शब्द रूपावली आदि छोटे-छोटे व्याकरण के ग्रन्थ भी पूरे हो गये थे। पिताजी जहाँ शिव पुराण आदि की कथा होती थी वहाँ मुझको पास बैठाकर सुनाया करते थे। और घर में भिक्षा की जीविका नहीं थी किन्तु जमींदार और लेने-देने से जीविका के प्रबन्ध करके सब काम चलाते थे। और मेरे पिता ने माता के मना करने पर भी पार्थिव पूजन का पाठ आरम्भ करा दिया था।..."

इस आत्मकथन की पृष्ठभूमि में मूलशंकर की मानसिकता को समझा जा सकता है और समझा जो सकता है कि उस विद्रोह को जो शिव-रात्रि के जागरण के समय चुहिया को शिवलिंग पर चढ़कर प्रसाद खाते देखकर फूट पड़ा था।

जिस समय युवा होते मूलशंकर के मन में प्रश्नाकुलता उमड़-घुमड़ रही थी उस समय देश की क्या अवस्था थी। उनके जन्म होने तक अंग्रेजों का आधिपत्य बड़ी सीमा तक स्थापित हो चुका था। देशी राज्य धीरे-धीरे उनके अधिकार में आते जा रहे थे या करद राज्य बन रहे थे। मराठों की शक्ति प्रथम शताब्दी में टूट चुकी थी। छोटे छोटे राज्यों में बँटकर वे आपस में लड़ रहे थे। पंजाब का सिख राज्य भी तब तक समाप्त हो चुका था जब किशोर मूलशंकर के मन में सच्चे शिव से साक्षात्कार करने की आकांक्षा उन्हें घर छोड़ने को विवश कर रही थी। मुगल नाममात्र को शासक रह गये थे। ऐश्वर्य-विलास और उत्तराधिकारी के षड्यंत्रों ने उन्हें खोखला कर दिया था।

दक्षिण में अंग्रेज अपनी चाल चल रहे थे। मैसूर में टीपू की शक्ति समाप्त हो रही थी। सुदूर केरल में वेलुतम्पी दलवा की सन् १८०९-१० की क्रांति को कुचलने के बाद अंग्रेजों को वहाँ कोई डर नहीं रह गया था। उत्तर पूर्व में राजपूतों की शक्ति भी कभी की समाप्त हो चुकी थी। यद्यपि अभी भी अंग्रेजों के विरुद्ध सामूहिक चेतना का अभाव था पर अपने-अपने राज्य की रक्षा के लिए जो बेचैनी शासकों में उभर रही थी वह धीरे-धीरे जनता को भी छू रही थी। उसके कारण कुछ और भी थे। विदेशी शासक अपने साथ अपनी सभ्यता और संस्कृति भी लाये थे बल्कि यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि उनसे पहले ईसाई मिशनरी इस देश में आये। उन्होंने इस देश को सभ्य बनाने के लिए दो मार्ग अपनाये। एक था अपने धर्म की श्रेष्ठता दिखाने के लिए हिन्दू धर्म पर, उसकी कुरीतियों का प्रदर्शन करके, सीधा आक्रमण। दूसरा, वहाँ की भाषा और यहाँ के व्यवहार सीखकर धीरे-धीरे अपनी धर्म-पुस्तकों का प्रचार करना और पीड़ित जनता की नाना रूपों में सहायता करना।

ऐसी अवस्था में जहाँ एक ओर हमारे ज्ञानचक्षु खुले। नयी सभ्यता के मुक्त प्रांगण में मुक्त होकर साँस लेने का अवसर मिला वहाँ दूसरी ओर उनके आक्रमण का जवाब देने के लिए हमने आत्म-मंथन भी शुरू कर दिया और अनुभव किया कि हमारे अतीत में जो कुछ शुभ और सुन्दर था उसे भूलकर हम रूढ़ियों, कुरीतियों और नाना प्रकार के पाखंडों में फँस गये हैं। छूत-छात, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, नारी जाति का अपमान, कन्या-वध, सती-प्रथा, जाति-पाँति, ऊँच-नीच, कोई अन्त नहीं इन दुष्कर्मों का। आवश्यकता उसे मुक्त होने की है। ऐसा होने पर हम पश्चिम के आक्रमण का जवाब दे सकेंगे।

('स्वामी दयानन्द सरस्वती : भारतीय साहित्य के निर्माता' से साभार)

शुभाकांक्षा

'आर्य लोक वार्ता' का प्रवेशांक

जनवरी-२० प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ पर गीतऋषि श्री अमृत जी का 'पुरुरवा उर्वशी संवाद' पढ़कर जिस आनन्द की अनुभूति हुई वह वर्णनातीत है। इससे पूर्व जीवन में कभी इतनी सुंदर काव्य रचना, जिसमें वेदमंत्रों का सार तत्व वर्णित हो, पढ़ने को नहीं मिली। यह पद्यानुवाद अद्भुत है। सचमुच, जैसा आपने अपनी टिप्पणी में लिखा है, यह अनुवाद विश्व साहित्य में अपना स्थान बनाने में सक्षम है। अनेक तरह की भ्रांतियों तथा वेदों में इतिहास सिद्ध करने वालों के लिए यह बहुत बड़ी शिक्षा इस रचना द्वारा सहज ही मिल जाती है। 'आर्य लोक वार्ता' द्वारा जो नई नई प्रस्तुतियाँ प्रकाशित की जा रही हैं, उसी परम्परा की एक शानदार कड़ी है-यह 'पुरुरवा उर्वशी संवाद'। अमृत खरे समस्त अध्यात्मवेत्ताओं के अभिनन्दन स्वागत के पात्र हैं। मैंने बहुत संभालकर 'आर्य लोक वार्ता' की यह प्रति रख ली है। इसी अंक में दूसरी सबसे बड़ी चीज है-स्व.स्वामी आत्मबोध सरस्वती (महात्मा आर्यभिक्षु) का सचित्र स्मरण। उनके जन्मदिवस पर प्रतिवर्ष 'आर्य लोक वार्ता' का यह कृतज्ञता ज्ञापन मानवता की बहुमूल्य निधि है। मैं स्वामी आत्मबोध जी के अत्यधिक निकट रहा हूँ तथा उनके जीवन और आदर्शों से प्रेरणा प्राप्त करता रहा हूँ। स्वामी आत्मबोध जी का यह उद्घोष कभी भुलाया नहीं जा सकता है-"निर्धन धनवान से डरता है, निर्बल बलवान से डरता है, मूर्ख विद्वान से डरता है, किन्तु ये तीनों चरित्रवान से डरते हैं।" सुंदर समाज की रचना के लिए वे सतत प्रयत्नशील रहे थे। 'आर्य लोक वार्ता' उन्हीं के पद चिन्हों पर चल रहा है तथा सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य को आर्यभिक्षु का आशीर्वाद प्रारंभ से ही मिलता रहा है, मैं स्वयं इसका साक्षी रहा हूँ। आशा है, 'आर्य लोक वार्ता' इसी प्रकार प्रगति के नये आयामों का सृजन करता रहेगा।

-आचार्य सत्यप्रकाश आर्य
आवास विकास कालोनी, बाराबंकी, उ.प्र.

***

'आर्य लोक वार्ता' का दिसम्बर २०१६

अंक प्राप्त हुआ। 'आर्य लोक वार्ता' के मुखपृष्ठ का लेख हर बार कुछ न कुछ विशेषता लेकर आता है। इस बार भी डॉ. चन्द्रपाल शर्मा जी ने सीता परित्याग की कथा को लेकर बड़े ही सारभूत तथ्यों को उजागर करते हुए सिद्ध किया है कि वाल्मीकि रामायण में 'उत्तर काण्ड' के बाद जोड़ा गया क्षेपक है, जो तथ्यों की कसौटी पर सत्य सिद्ध होता है।

सम्पादकीय 'ज्ञानी कौन?' में कई प्रसंग आये हैं। वर्तमान समय की गम्भीर समस्या 'नागरिकता संशोधन कानून' के नाम पर जनता में फैलाई जा रही गलतफहमी भी इनमें से एक है। साथ ही मरणोपरान्त बनाई जा रही समाधियाँ और स्मारक भी भारतीय संस्कृति के विपरीत हैं। महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती एवं बाँके बिहारी हर्ष का परिचय भी जन समाज हेतु लाभदायक है, यह परम्परा चलनी चाहिए। 'काव्यायन' में इस बार दिवंगत कवियों को स्थान अधिक प्राप्त हुआ है, जैसे रामधारी सिंह 'दिनकर', जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' और गोमती प्रसाद पाण्डेय 'कुमुदेश' आदि। पुराने कवियों को याद करना, भी परमावश्यक है। 'रत्नाकर' जी तथा 'दिनकर' जी को तो पाठ्यक्रम में पढ़ता रहा हूँ परन्तु 'कुमुदेश' जी के दोनों सवैया छन्द पाठकों को सुन्दर सन्देश देते हैं। बलवीर सिंह 'रंग' की कविता 'विश्वास बहुत है' एक विरह गीत है जो अपने में विप्रलम्भ शृंगार के सभी गुण सहेजे हुए है। गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र' की 'गीतिका', डॉ.कैलाश निगम और बाँके बिहारी 'हर्ष' की रचनाएँ भी कुछ सन्देश देती हैं। अन्य लेख व समाचार भी ज्ञानवर्धक हैं अच्छे और लाभदायक अंक हेतु सम्पादक ही को कोटिशः धन्यवाद।

-दयानन्द जड़िया 'अबोध'
370/27, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' जनवरी-२०२०अंक

अपने आप में अनूठा है। विशेषकर श्री अमृत खरे द्वारा रचित 'पुरुरवा उर्वशी संवाद' तो साहित्य में एक नया पृष्ठ जोड़ने वाला है। मैं इस काव्यानुवाद को बार बार पढ़ती हूँ। यह भावविभोर कर देने वाली रचना है। अमृत खरे जी को 'गीतऋषि' कहना सर्वथा सार्थक है। इस तरह की रचनाओं को प्रकाश में लाने का श्रेय 'आर्य लोक वार्ता' को ही प्राप्त है। यही कारण है कि जो भी विवेकशील है, स्वाध्याय प्रेमी है, 'आर्य लोक वार्ता' उसकी पहली पसंद बन चुका है। इस रचना के लिए मैं कवि श्री अमृत खरे तथा सम्पादक मंडल को हार्दिक बधाई प्रेषित करती हूँ। प्रख्यात लेखक-साहित्यकार, साहित्य-मनीषी डॉ. चन्द्रपाल शर्मा, पिलखुआ द्वारा इससे पूर्व अंक में 'सीता परित्याग' की कथा को मनगढंत और काल्पनिक बताया गया है तथा इस संबन्ध में अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं। डॉ.शर्मा को भी धन्यवाद है और समाज को उनका आभार मानना चाहिए कि उन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन पर लगाये गये इस लांछन को निर्मूल करने का सराहनीय कार्य किया है। घर घर में इस लेख का प्रचार प्रसार होना- समय का तकाजा है। आपके द्वारा प्रकाशित वैदिक तिथि पत्रक अत्यंत उपयोगी है। साथ ही आर्यभिक्षु जी का पुण्य स्मरण आपके अन्दर निहित कृतज्ञता की भावना को प्रमाणित करता है।

-रामा आर्य 'रमा'
417/10, नेवाजगंज, चौक, लखनऊ-3

***

आर्य लोक वार्ता के अगस्त-१६ अंक

से ज्ञात हुआ कि आर्य लोक वार्ता अपनी नवीन एवं श्रेष्ठ साज सज्जा के साथ २२वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। आर्य लोक वार्ता को स्थापित हुये लगभग दो वर्ष हुए होंगे जबसे मैंने इसकी सदस्यता ग्रहण की। यहाँ पर मैं यह वर्णन कर रही हूँ कि इस पत्रिका में सर्वप्रथम कैसे सम्पर्क में आई। इसका श्रेय भ्राता पाल प्रवीण जी को जाता है जिनके आवास पर आयोजित हवन-संध्या में मेरा परिचय डॉ.वेद प्रकाश जी आर्य से हुआ। वेद विज्ञान के जाने माने महापुरुष से परिचय होना मेरा सौभाग्य रहा। इतना ही नहीं पाल प्रवीण जी के आवास पर आयोजित अनेक संघ याओं में मैं उन उन्नायकों का परिचय प्राप्त कर सकी जो आज इस संसार से विदा ले चुके हैं। यह मेरे लिये ईश्वर की देन से कम नहीं और इसका सारा श्रेय भ्राता पाल प्रवीण जी को है। मैं सदैव प्रवीण जी की आभारी रहूँगी।

अगस्त २०१६ के प्रथम पृष्ठ पर ठाकुर विक्रम सिंह ने कुंवर सुखलाल मुसाफिर जो आर्य भजनोपदेशकों के शिखर पुरुष थे, जिन्होंने अपने जोशीले तरानों से जनता को मंत्रमुग्ध करके आजादी का इतिहास रचा। अति सार गर्भित रूप से प्रस्तुत किया गया है। आर्य समाज के महापुरुषों के विषय में जानना अति शिक्षाप्रद है। सम्पादकीय में डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने 'सज गई बिन्दी' का अनूठा वर्णन किया। बिन्दी का महत्व अति भावपूर्ण है। सत्यार्थ प्रकाश वार्ता में ईश्वर की न्याय-व्यवस्था जानकर मुझे एक भजन की चन्द पंक्तियां याद आ गईं--'भेद वह तो किसी में नहीं देखता, चाहता है वह रहे सबमें एकसा। उसको इन्सान बनकर दिखायेंगे हम, क्या हुआ गर बन न पाये देवता'। वेदांजलि में उल्लास जीवन की रूपरेखा अति महनीय है। आर्य संस्कृति के मूल तत्व शीर्षक से डॉ.सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार जी द्वारा भौतिकवाद एवं अध्यात्मवाद की चर्चा एक उच्च आदर्श है। आज के भौतिकवाद युग में अध्यात्मवाद की ओर नवयुवकों का नजरिया बादलों में चांद छुप जाने जैसा प्रतीत होता है। समयानुसार अध्यात्म का ज्ञान भक्ति का साधन है। स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती का लेख दयानन्द और विवेकानन्द जैसे महापुरुषों के विषय में बचपन से ही पढ़ती रही हूँ। दोनों की विचारधारा भिन्न होने पर भी अति सन्देशवाहक है। काव्यायन में प्रत्येक कवि ने अपने अपने हृदय से कविता रचकर अपनी भावनाओं का प्रदर्शन किया है। डॉ.वेद प्रकाश आर्य जी की कविता 'कश्मीर : धरा का नन्दन' में कश्मीर की वादियों का अतिसुन्दर रूप से वर्णन किया है। कविता की हर पंक्ति मेरे मानस पटल की याद ताजा कर गई क्योंकि कश्मीर की वादियों का भ्रमण मैं दो बार कर चुकी हूँ। वादियों के हर कोने से परिचित हूँ। अधिक क्या लिखूँ और कहाँ तक लिखूँ। मेरी कृतज्ञता का कोई अन्त नहीं। भावनाओं का भी अन्त नहीं है।

-कुमुद गुप्ता
बी-1/114, अलीगंज, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' कई वर्षों से हमारे

यहाँ डाक द्वारा पहुँचता रहता है। खेद है कि यहाँ परिवार के लोग उतना ध्यान नहीं देते, जितना देना चाहिए तथापि दिसम्बर २०१६ अंक में मेरे बड़े भ्राता स्व.श्री राम प्रकाश द्विवेदी का चित्र छपा था, जिसपर निगाहें टिक गईं। धन्यवाद है 'आर्य लोक वार्ता' और उसके सम्पादकों को जिन्होंने श्री राम प्रकाश द्विवेदी का चित्र प्रकाशित किया। राम प्रकाश जी एक बहुत ही सहृदय इंसान थे। उनकी सेवाओं को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। वे सदैव हम लोगों की सहातार्थ तत्पर रहते थे। उनके निधन से हम सभी लोग अत्यधिक दुखी हैं। परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति और सद्गति प्रदान करे।

-सुषमा मिश्र
बक्सर, जिला-हरदोई

***

'आर्य लोक वार्ता' पत्र का जनवरी

अंक अत्यंत दिव्य एवं भव्य लगा। उर्वशी पुरुरवा संवाद विषयक ऋग्वेद मंत्रों का मनीषी कवि अमृत खरे द्वारा भावपूर्ण पद्यानुवाद की अनमोल प्रस्तुति अकथ है। साथ ही आपकी विद्वत्तापूर्ण टिप्पणी सम्यक ज्ञान वर्द्धन करती है। 'विनम्र' मन बन्धुवर अमृत खरे को अमित साधुवाद और आपकी उदात्त भावना को नमन करता है-

पुरु-उर्वशी संवाद को, नवरूप 'अमृत' ने दिया।
काव्यामृत को बाँटकर, वि-ज्ञान सत पुष्पित किया।
अति धन्य 'अमृत' लेखनी, जो शब्द में विद्युत भरे-
शुभ गीत-ऋषि की साधना का, नाम है अमृत खरे।

'सबसे बढ़कर कौन' संपादकीय में आपने वर्ष २०१६ की प्रमुख घटनाओं का जो सार-संक्षेप दिया है, वह विशिष्ट एवं सराहनीय है। श्री नरेन्द्र मोदी निर्विवाद रूप से इतिहास पुरुष हैं, किन्तु सफल राजनेता के रूप में उन्हें अभी और कला कौशल सीखने होंगे। महात्मा आर्यभिक्षु का जीवन परिचय भावपूर्ण है, देश को ऐसे ही कर्मयोगी भिक्षुओं की आवश्यकता है। जिज्ञासा और समाधान, दयानन्द चरितामृतम्, वेदांजलि, सत्यार्थ प्रकाश वार्ता स्तम्भों में जीवनोपयोगी ज्ञान प्रदान किया गया है। विषय संकलन हेतु आपकी प्रबुद्धता प्रशंसनीय है। 'अक्षर लोक' में कविवर दयानन्द जड़िया 'अबोध' की 'ऐसा वर दो' कृति की समीक्षा हेतु अमृत खरे जी का आभार तथा ११७ प्रकार के छंदों में २११ वाणी वंदनायें सृजन हेतु 'अबोध' जी को हार्दिक बधाई। 'काव्यायन' में समसामयिक तथा कालजयी रचनाकारों की उपस्थिति प्रणम्य है, इसके अतिरिक्त 'शुभाकांक्षा' पृष्ठ में मनीषी विद्वानों के सुविचार सद्ज्ञान को दिशा प्रदान करते हैं। आर्य पर्वों की तालिका ने इस अंक को और महत्वपूर्ण बना दिया है। आपकी कर्मठता स्तुत्य है।

'आर्य लोक' वक्षत्र है, ऋषिवर वेद प्रकाश।
दयानंद-सदकृपा से, आयु न करे हताश।
पाठक-गण को दे रहा, 'पत्र' ज्ञान विज्ञान।
बोध सुचिंतन से मिले, छँटे तिमिर-अज्ञान।।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' दिसम्बर २०१६

अंक मुझे डाक द्वारा प्राप्त हुआ। यहाँ कोई ध्यानपूर्वक अखबारों को पढ़ता नहीं है तथापि मेरी छोटी सी पौत्री जिसे अभी अक्षरज्ञान भी नहीं है, उलट पुलट कर अखबार देखा परखा। अचानक उसकी निगाह एक जगह पर अटक गई। वह बोल उठी-मेरे बाबा, मेरे बाबा। अन्य लोगों ने देखा तो वास्तव में उसके स्वर्गीय बाबा श्री राम प्रकाश द्विवेदी का चित्र छपा हुआ था, जिनका कुछ दिन पूर्व ही आकस्मिक निधन हो गया था। सभी उस नन्हीं सी बच्ची की बुद्धि की सराहना करने लगे। धन्यवाद है 'आर्य लोक वार्ता' को जिसने श्री राम प्रकाश द्विवेदी का चित्र प्रकाशित कर उनकी स्मृति को स्थायी बना दिया। 'आर्य लोक वार्ता' की वह प्रति सुरक्षित करके मैंने बक्से में रख ली है क्योंकि राम प्रकाश द्विवेदी मेरे पति थे। कई वर्षों के अनवरत प्रयास, चिकित्सा, सेवा सुश्रूषा के बाद भी हम उन्हें बचा नहीं पाये। ईश्वरीय विधान के आगे मनुष्य का कोई जोर नहीं चलता है।

-उर्मिला द्विवेदी
कछोना, बालामऊ, जिला-हरदोई

***

सम्पादक जी ने 'आर्य लोक वार्ता' के

अंक-७, पृष्ठ-७ पर अपनी निजता की व्यथा व्यक्त की है। यह आपके धैर्य की परीक्षा है। यदि आप सफल हुए तो कार्य सुचारु होगा, यदि आप विचलित हुए तो 'आर्य लोक वार्ता' के कार्य में व्यवधान होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि अद्यतन आपने धैर्य व संयम बनाये रखा है जैसा कि आपकी स्वरचित पंक्तियों द्वारा स्वतः व्यक्त है। इस प्रकरण में मैं इतना व्यक्त कर रहा हूँ कि आपकी विषम दशाओं में भी जो आपकी सौम्यता, धीरता विद्यमान है, वह महानू दैव तत्वों का आपमें मांगलिक संयोग है। ऐसे निर्भयी, पराक्रमी, कर्मवीरों को सदैव सहयोग मिलता ही रहता है, यह ईश्वर प्रदत्त है। क्योंकि आपका कार्य ऋषि ऋण से मुक्त होने का है, आपको संसार से पाने की नहीं अपितु देने की चाह है। कृपया इस परोपकार में सतत संलग्न रहें।

-प्रेमचन्द्र शर्मा
15, बहादुर पुर, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' नियमित प्राप्त हो

रहा है। इसके लिए मैं बहुत आभारी हूँ कि यह पत्र मुझे पूरे मास भर सद्ज्ञान तथा नई ऊर्जा से भरता रहता है। इसका कोई भी अंक कभी पुराना नहीं होता और मैं प्रत्येक अंक संजोकर रख लेती हूँ। इसके समान मुझे अन्य कोई पत्र या पत्रिका अमूल्य नहीं लगती। सद्गृहस्थ होकर भी आपने जो 'आर्य लोक वार्ता' परिवार निर्मित कर लिया है, वह किसी विशुद्ध आश्रम से कम नहीं है। स्वामी दयानन्द के विचारों को आप मूर्तरूप दे रहे हैं, यह किसी यज्ञ से कम नहीं है। जनवरी अंक में अमृत खरे का उर्वशी-पुरुरवा काव्यमय संवाद ने बहुत प्रभावित किया। सद्ग्रन्थों के अलंकारिक प्रसंगों का ऐसे ही ज्ञान विज्ञान मय विवेचन होना चाहिए क्योंकि कवियों ने ऋषियों की वाणी को कल्पना में ढालकर बहुत अनर्थ किया है, हम सत्य से इतना दूर हो गए हैं कि वेद वाणी को अप्रासंगिक समझ बैठे हैं। भारत इसी ज्ञान-विज्ञान के कारण जगद् गुरु रहा है। हमें पुनर्जागरण के यत्न करने चाहिए। महात्मा आर्यभिक्षु का जीवन-चरित्र अनुकरणीय है। सभी स्थायी स्तम्भ पूर्व की भांति ज्ञानवर्द्धक हैं।

जीवन में आता रहे हँसता हुआ वसंत।
पुष्पों जैसा मन खिले, गाए-धरा-दिगंत।।

-सविता वाणी
चौक बाजार, गौरीगंज, अमेठी, उ.प्र.

***

धारावाहिक-12 कालजयी रचना

आर्य-संस्कृति के मूल तत्त्व

-डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार-

सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत।
कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम् ।।

जैसे मूर्ख लोग कर्म-फल की आशा से, अत्यन्त उत्साह से किसी कार्य को करते हैं, वैसे विद्वान् लोग बिना कर्म-फल की आशा से, उससे भी दुगुने उत्साह से काम में जुटे रहते हैं। 'निस्संग-भाव' का यह परिणाम नहीं होना चाहिये कि कर्म करने में शिथिलता आ जाय--तब तो 'योग-मार्ग' 'सांख्य-मार्ग' ही हो जायगा। काम तो मनुष्य दुगुने उत्साह से करे, परन्तु काम करता हुआ ऐसे ही रहे मानो कुछ किया ही नहीं, किया और करके अलग हो गये, उससे चिपटकर न बैठ रहे--यही 'निष्काम-कर्म' है।

निष्काम-कर्म असंभव नहीं, संभव है-

कर्म करते हुए उसके फल की आशा न करना कहने में सरल परन्तु करने में कठिन है। प्रत्येक व्यक्ति फल की आशा से काम करता है। क्या कोई ऐसा उपाय है जिससे हम अपने भीतर फल की आशा न करने की भावना को, अनासक्ति को जन्म दे सकें? इसी का उत्तर देते हुए श्रीकृष्ण महाराज ने कहा है कि जो लोग जीवन को यज्ञमय बना लेते हैं वे अपने-आप 'निष्काम-कर्म' करने लगते हैं। गीता में लिखा है--

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसंगः समाचर।।
यज्ञशिष्टाशिनः सन्तः मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः।
भुंजते ते त्वघं पापाः ये पचन्त्यात्मकारणात्।।

जीवन को यज्ञ समझकर चलो। यज्ञ का अभिप्राय है--'त्याग'। स्वार्थ की भावना को छोड़ देना ही तो यज्ञ है। यज्ञ करते हुए मनुष्य अपने को परमात्मा की महान् शक्ति के सहारे छोड़ देता है। मैं कुछ नहीं, तू ही सब-कुछ है, मेरा कुछ नहीं, सब तेरा-ही-तेरा है--'इदन्नमम'--यही भावना यज्ञ की आधार-भूत भावना है, यही भावना यज्ञ में जगमगा उठती है। जो भावना यज्ञ में होती है वही भावना अगर जीवन के प्रत्येक कार्य में अनुप्राणित कर दी जाय, तब तो प्रत्येक कार्य यज्ञ हो गया, जीवन ही यज्ञमय हो गया। यज्ञमय निःस्वार्थ जीवन बिताने वाले को गीता में 'आत्मरत'-'आत्मतृप्त'-'आत्मसंतुष्ट' कहा गया है--वह अपने में रमा हुआ है, आत्म में भरा हुआ है, अपने आत्मा में सन्तुष्ट है। स्वार्थमय जीवन बिताने वाले को 'इंद्रियाराम' कहा गया है, वह इन्द्रियों के साथ खेलता है, आत्मा से दूर भागता है। स्वार्थ की भावना को छोड़कर निस्संग, निष्काम, निर्मोह कार्य करना आर्य-संस्कृति का रहस्यमय उपदेश है, उसका बीज-मन्त्र है, और जीवन की गूढ़तम समस्या पर यही उसकी दार्शनिक विचारधारा है।

जीवन को यज्ञ समझना, अनासक्ति से संसार में रहना कोई अनहोनी बात नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन के किसी-न-किसी पहलू में निष्काम, निस्संग, निर्मोह, निस्वार्थ अवस्था को अनुभव करता है। डाक्टर मरीजों को दवाई देता है, कोई बच जाता है, कोई मर जाता है। जो मरीज मर जाते हैं उनके लिये डाक्टर को किसी ने रोते हुए नहीं देखा। डाक्टरों के हाथों सैकड़ों रोज मरते हैं, परन्तु सभी डाक्टर हंसते-खेलते देखे जाते हैं, उसी डाक्टर के घर यदि उसका बालक मर जाय तो वह अपने को संभाल नहीं सकता, बिलख-बिलख कर रोने लगता है। जो बुद्धि वह दूसरे के लिए धारण कर सकता है, वह अपने घर के लिए क्यों नहीं धारण कर सकता? उसमें निष्काम-भाव का, अनासक्ति का बीज है, तभी तो वह अपने हाथ से बीमारों को मरते देखकर भी यह कहकर कि मुझसे जो-कुछ जो सकता था मैंने किया, बिना रोये-धोये अपने काम में जुट जाता है। इसी निष्काम-भावना को जीवन में व्यापक बनाने से जीवन यज्ञमय हो जाता है। एक देवी का पति मर गया, दूसरी देवियां आकर उसे समझाती हैं, सब आकर कहती हैं, जीवन में हरेक को किसी-न-किसी दिन यह दिन देखना है, इसलिये चित्त को संभालो, अपने को विचलित मत होने दो, परन्तु उनके लिये जब वही दिन आता है, तब वे भी अपने को संभाल नहीं पातीं, विचलित हो उठती हैं। वे दूसरे से निस्संगता, निष्कामता, अनासक्ति की आशा करती हैं, तो उनसे भी तो वही आशा की जा सकती है। एक व्यापारी का माल लुट गया, हम उसे जाकर समझाते हैं, लेकिन अपने माल के लुट जाने पर हमारी भी वही दशा हो जाती है। यह सब क्यों होता है? यह इसलिये कि जब हम दुःखी नहीं होते तब तो हमने निष्कामता, निस्संग-भाव धारण किया होता है, जब दुःखी होते हैं तब सकामता, संग-भाव धारण किया होता है। दुनियाँ में रहते हुए दुनियाँ से अलग रहना, कर्म करते हुए भी मानो कर्म न करना, जाल में फंसते हुए भी जाल को काटते जाना, पानी में गोता लगाकर भी--'पद्मपत्रमिवाम्भसा'--पानी में न भीगना--यह कृष्ण महाराज का बताया हुआ जीवन का गुर है, आर्य-संस्कृति का मूल-मंत्र है। इस प्रकार की भावना का उदय जीवन में यज्ञ-वृत्ति धारण करने से होता है, स्वार्थ से नहीं, परार्थ से होता है, भोग-भाव से नहीं, त्याग-बुद्धि से होता है। यज्ञ में बार-बार जो 'स्वाहा' शब्द का उच्चारण किया जाता है उसका भी यही अभिप्राय है। स्वाहा शब्द 'ओहाक् त्यागे' धातु से निष्पन्न हुआ है। 'स्वाहा', अर्थात् 'त्याग'--'इदन्न मम'--यह मेरा नहीं, भगवान् का है! जो अपने सब-कुछ किये को यज्ञ की भावना से 'स्वाहा' का उच्चारण कर, भगवान् के चरणों में भेंट कर देता है, वह बेलाग हो जाता है, बेदाग हो जाता है, और उसके कर्म में से मनुष्य को दुःख पहुंचाने वाला संग का कांटा निकल जाता है। भगवान् के चरणों में सब कर्मों की भेंट चढ़ाने का उपदेश देते हुए गीता में लिखा है--

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन् कर्म परमाप्नोति पूरुषः।।
मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा।
निराशीर्निर्ममो भूत्वा युद्ध्यस्व विगतज्वरः।।

(आर्य संस्कृति के मूलतत्त्व' ग्रंथ से साभार क्रमशः)

व्याख्यान माला-4

शंकर और दयानन्द

-महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती-

रात्रि हुई तो जंगल में ही एक स्थान पर ठहर गए। देवदार का एक बड़ा वृक्ष था उसके नीचे लेट गया। मेरे पास कुलियों ने अग्नि जला दी जिससे जंगली पशु न आयें। उसी समय दो कुली नीचे से आये। उन्होंने बताया कि आगे पहाड़ टूट गया है, जाने का मार्ग नहीं। दो साधु टूटे हुए पहाड़ में जाने का प्रयत्न करते हुए मर गये हैं। मेरे कुलियों ने सुना तो बोले, 'हम आगे नहीं जायेंगे'। मैंने कहा, 'अभी तो सो जाओ, प्रातः उठकर देखेंगे कि क्या करना है।' परन्तु जब प्रातः मैं उठा तो देखा कुलियों का कहीं चिन्ह भी नहीं। वे रात के अंधेरे में ही चले गये थे। मैं चकित हुआ कि अब क्या करूँ। जलती हुई अग्नि मेरे पास थी। कुली कृपा कर के मेरे कमण्डल में पानी भर गये थे। केवल छः बिस्कुट मेरे पास थे। चल मैं सकता नहीं था। नदी भी आधा मील नीचे थी। दिन भर बैठा रहा। रात्रि आ गई। अग्नि में कुछ और लकड़ियां डाल के बैठा रहा। दूसरा दिन हो गया। इसी प्रकार तीन दिन व्यतीत हो गये। तीन रातें व्यतीत हो गईं। छः बिस्कुट जो मेरे पास थे, वे भी समाप्त हो गये। पानी भी समाप्त हो गया। मैंने समझा अब मेरा अन्तिम समय आ गया है। उस समय कौन था मेरा! हनुमान रोड वाले, कनाट प्लेस वाले, किसी आर्य समाज का मंत्री, किसी सभा का प्रधान, कोई भी नहीं था, किसी का आश्रय न था। उस समय मेरे हृदय के भीतर कोई चिल्ला रहा उठा-

किस संग कीजे मित्रता, सब जग चालन हार।
निश्चल केवल है प्रभु, उस संग कीजे प्यार।।

उस समय बेटे नहीं थे, बेटियां नहीं थीं, जागीर नहीं थी, व्यापार नहीं था, जिस आर्य समाज के लिए कार्य किया उसका कोई प्रधान, मंत्री भी नहीं था। वे बंगाली नहीं थे जिन्होंने कहा था-'आनन्द स्वामी तू बहुत अच्छा है।' वे मद्रासी नहीं थे जो कहते थे, 'सदा तेरे साथ रहेंगे।' कोई नहीं था, केवल प्रभु था एक, उसकी कृपा से तीसरे दिन सायं कुछ नेपाली कुली आये, उनकी सहायता से मैं चारचूला पहुँचा।

अरे सावधान! सम्भल कर देखो। जिस संसार के पीछे तुम पागल हुए जाते हो यह किसी के साथ नहीं गया, कभी किसी के साथ जायेगा भी नहीं, यह नष्ट होने वाला है। सदा साथ देने वाला नहीं है, इस पर विश्वास मत करो।

इस प्रकार मन को समझाओगे तो मन वश में आयेगा। मन वश में आ जाये तो फिर आनन्द आयेगा। स्वप्न देखते समय इन्द्रियां सो जाती हैं, मन जागता रहता है। मन भी सो जाये तो गाढ़ निद्रा आ जाती है। केवल आत्मा जागता रहता है। जागकर मनुष्य कहता है, "आज सोने में बहुत आनन्द आया।" अरे! आनन्द किसको आया तुम तो सो रहे थे! आया उसको जो कभी सोता नहीं, जो सदा जागता है--आत्मा। इस आत्मा को जान लेने से मनुष्य प्रत्येक दशा में शान्त रहता है। यह पहला साधन है। शम का अधिकारी बनने के लिए मन को वश में करो।

जगद्गुरु शंकराचार्य से उनके शिष्य ने पूछा, "जगत् को कौन जीत लेता है" जगद्गुरु बोले, "जो मन को जीत लेता है।"

बहुत बुरा भला कहा मन को शंकर ने। एक स्थान पर वे कहते हैं, "इच्छओं का एक भयानक जंगल है जिसमें मन नाम का भयंकर सिंह रहता है, जो लोग आत्मा का दर्शन करना चाहते हैं उन्हें इस जंगल में नहीं जाना चाहिये।"

कुछ लोग कहते हैं, "हम तो इस जंगल में जाना नहीं चाहते, यह सिंह ले जाता है, यह सिंह है जो छोड़ता ही नहीं, इससे छुटकारा कैसे पायें?"

महाराज जनक से भी एक बार किसी ने यह प्रश्न पूछा था। जनक एक वृक्ष के पास खड़े थे, बोले, "यह वृक्ष मुझे छोड़ दे तो आपके प्रश्न का उत्तर दूँ।" पूछने वाले ने कहा, "महाराज आप ज्ञानी होकर मूर्खों की सी बातें करते हैं, वृक्ष ने आपको नहीं पकड़ रखा है, आपने वृक्ष को पकड़ रखा है, यह वृक्ष तो जड़ है यह आपको क्या पकड़ेगा?"

आजकल वह व्यक्ति होता और आजकल जनक ऐसा करते तो वह व्यक्ति उन्हें कहता-

फलेबदे तो खुद करें लानत करें शैतान पर।

जनक ने कहा, "तू ठीक कहता है भाई, यह वृक्ष जड़ है, इसने नहीं, मैंने इसको पकड़ रखा है, परन्तु याद रख मन भी तो जड़ है उसने तुम्हें पकड़ नहीं रखा, फिर मुझसे क्यों कहते हो कि वह छोड़ता नहीं।" यह है दूसरा साधन, मन को वश में करने का। मन की वास्तविकता को समझो, वह जड़ है, उसमें कोई शक्ति नहीं, शक्ति तुम्हारे अन्दर है, ऐसा समझोगे तो मन वश में अवश्य हो जायेगा।

दूसरा साधन है विचार, निरन्तर यह सोचना कि मेरा लक्ष्य क्या है? बार-बार सोचो, लक्ष्य की प्राप्ति के लिये एक तीव्र इच्छा अपने अन्दर उत्पन्न करो, सोते उठते बैठते जागते उनका ध्यान रखो।

ज्यों त्रिया पीहर बसे सुख रहे पीया माँहि।
तैसे नर जग में रहे प्रभु को विसरे नाँहि।।

आजकल वैज्ञानिक भी कहते हैं यदि किसी बात को बार बार सोचो तो वह अवश्य होती है। कभी थोड़ा समय लगता है कभी अधिक किसी न किसी समय होती है।

परन्तु आजकल हम क्या सोचते हैं कोई सोचता है मैं मन्त्री बन जाऊं, कोई सोचता है मेरे मकान में बिजली लग जाये। कोई सोचता है, मेरे पास धन के ढेर लग जायें। याद रखो, इन नाशवान वस्तुओं के लिए सोचते रहोगे तो अन्त में नाश ही मिलेगा। उपनिषद कहता है कि मनुष्य अपने बनाये हुये संसार में उत्पन्न होता है। आप कहेंगे कि आर्य समाज के प्लेटफार्म से मैं यह क्या कहता हूँ। परन्तु मैं वह कहता हूँ जो वेद कहता है। सृष्टि में शक्ति ईश्वर की है, शेष सब कुछ आत्मा की इच्छानुसार है। वह इच्छा करता है, सोचता है, वैसे ही उसका संसार बनता चला जाता है, इसीलिए कहते हैं कि माँ अपने बच्चे को बुरे संस्कार न दे। अच्छी भावनायें अच्छे विचार उसे देने का प्रयत्न करें। उसे दूध पिलाते समय अच्छा बुरा वह जो कुछ सोचती है उसका बच्चे पर प्रभाव पड़ता है। मैं कई स्थानों पर जाता हूँ। माता-पिता कहते हैं हमारा बच्चा बहुत नटखट है, उपद्रव बहुत करता है। मैं उन्हें कुछ नहीं कहता, परन्तु मन ही मन सोचता हूँ, इसमें दोष किसका है? जैसा तुमने बना दिया वैसा बन गया वह। अब उसे कोसते क्यों हो? इसलिये वेद में प्रार्थना करता हुआ भक्त कहता है--

हे प्रभो! मेरे मन में अच्छे संकल्प पैदा हों, अच्छे विचार पैदा हों परन्तु केवल प्रार्थना करने से तो कुछ नहीं होता। प्रार्थना करो अवश्य परन्तु उसके साथ ही प्रार्थना के अनुकूल कर्म भी करो, बम्बई जाने की इच्छा हो तो उस गाड़ी में बैठो जो बम्बई जाती है। यदि अमृतसर जाने वाली गाड़ी में बैठ जाओगे तो बम्बई कभी नहीं पहुँच सकोगे।

तीसरा साधन है त्यागः-ब्रह्म को और ईश्वर को पाना चाहते हो तो उसके गुणों को अपने अन्दर लाने का भी प्रयत्न करो। इसका सबसे महान गुण है त्याग। उससे बड़ा त्यागी और कोई नहीं, सब कुछ दे देता है अपने लिए कुछ भी उसको चाहिए नहीं, त्याग में सुख कितना है, इसको कुछ लोग समझ नहीं पाते। एक कथा सुनिये- एक था कृपण, इतना कंजूस कि अपने आप पर भी धेला नहीं खर्च करता था। लाखों का स्वामी था। फटे कपड़े पहने रहता था। केवल एक अच्छी बात थी उसमें सत्संग में जाता था। वहां भी उसे कोई पूछता न था। सबसे अन्त में जूतों के पास बैठ जाता, कथा सुनता रहता। भोग पड़ने का दिन आया, तो सब भेंट चढ़ाने कोई न कोई वस्तु लाये। वह कृपण भी एक मैले रूमाल से बांध के कुछ लाया। सब लोग अपनी लाई वस्तु रखते गये, वह भी आगे बढ़ा। अपना रूमाल खोल दिया उसने। उसमें अशर्फियाँ थीं पौण्ड और सोना-इन्हें पंडित जी के समक्ष उड़ेल कर वह जाने लगा। पण्डित जी ने कहा, "नहीं नहीं, सेठ जी! वहाँ नहीं मेरे पास बैठो। सेठ ने बैठते हुए कहा, "यह तो रुपयों का सम्मान है, पण्डित जी, मेरा सम्मान तो नहीं।" पण्डित जी ने कहाः "भूलते हो सेठ जी, रुपया तो तुम्हारे पास पहले भी था। यह तुम्हारे रुपये का नहीं त्याग का सम्मान है।"

एक और कथा सुनिये। एक साधु किसी नगरी में रहता, भक्ति के गीत गाता था। लोग उसका सम्मान करते, उसे कितनी ही वस्तुएं देते। साधु ने अपने शिष्य से कहा, "बेटा चलो किसी दूसरे नगर में चलें।" शिष्य ने कहा, "नहीं, गुरु महाराज, यहाँ चढ़ावा बहुत चढ़ता है, कुछ पैसे जमा जो जायें, फिर चलेंगे।" गुरु ने कहा, "पैसे को जमा करके क्या करेगा। चल मेरे साथ, पैसा जमा नहीं करना है हमें।" चल पड़े दोनों। शिष्य ने कुछ पैसे लेकर रखे थे उन्हें धोती में बांध रखा था। चलते चलते मार्ग में नदी पड़ गई। एक नौका वहां थी। नौका वाला पार ले जाने के लिए दो दो आने मांगता था। साधु के पास पैसे नहीं थे। शिष्य देना नहीं चाहता था। दोनों बैठ गये। दो पहर हो गई, सन्ध्या हो गई, रात हो गई, वे बैठे थे। रात को नाविक अपने घर जाने लगा तो बोला, "बाबा! तुम यहाँ कब तक बैठे रहोगे, यह जंगल है, रात को सिंह इस किनारे पानी पीने आता है। अन्य जंगली पशु भी आते हैं, वे तुम्हें मार डालेंगे। शिष्य ने कहा, "तुम हमें पार ले चलो।" नाविक ने कहा, "मैं तो दो आने लिये बिना नहीं जा सकता।" शिष्य को सिंह के विचार से लगा डर। धोती से चार आने निकाल कर बोला, "अच्छा नहीं मानता तो ले।" नाविक ने चार आने लिए, उन्हें पार ले गया।

('शंकर और दयानन्द' से, क्रमशः)

काव्यायन

बगर्‌यो बसंत है

❑पदमाकर

और भांति कुंजन में गुंजरत भौंर भीर
औरै भांति बीरन के झीरन के ह्वै गयो।
कहै 'पदमाकर' सु और भांति गलियांनि
छलिया छबीलो छैल औरै छबि छ्वै गयो।
औरै भाति बिहँग समाज में आवाज होति
अबै ऋतुराज के न आजु दिन द्वै गयो।
औरै रस औरै रीति औरै राग औरै रंग
औरै तन औरै मन औरै बन ह्वै गयो।।

कूलन में केलिन में कछारन में कुंजन में
क्यारिन में कलित कलीन किलकंत है।
पढ़ै 'पदमाकर' परागहूं में पौनहूं में
पातिन में पीकन पलाशन पगंत है।
द्वारे में दिशान में दुनी में देश देशन में
देखौ दीप दीपन में दिपत दिगंत है।
बीथिन में ब्रज में नबेलिन में बेलिन में
बनन में बागन में बगरयो बसंत है।।

(जगद्विनोद से)

मैं वसंत

(खड़ी बोली बरवै)

❑नागार्जुन

मैं वसंत, मैं मदनसखा सुकुमार
त्रिभुवन पर मेरा अखंड अधिकार
मैं मरु-उर में उद्‌भिद का अवतार
नवल सृष्टि विधि को मेरा उपहार
मैं धरती का यौवन, मैं शृंगार
ऋतुएँ करती हैं मेरा मनुहार

जगत् प्राण मैं चंचल मलयसमीर
सबको रखता हुलसित, सतत अधीर
भरता रहता हूँ कण-कण में पीर
चला-चला कर सुरभि-श्वास के तीर
मैं अति चंचल, मैं अत्यन्त गंभीर
मुझमें घुलते मृगमद और उशीर

(भस्मांकुर से)

नागरिकता कानून

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

संशोधित है हो चुका, नागरिकता कानून।
घुसपैठिए अशांत हैं, फाड़ रहे पतलून।।

सीएए के साथ ही, लागू एन पी आर।
चीख रहे गद्दार हैं, समझाती सरकार।।

सीएए से हो रही, लोगों की पहचान।
जो होंगे घुसपैठिए, छोड़ें हिन्दुस्तान।।

आई एस आई का नहीं, भारत में कल्याण।
आतंकी को मिलेगा, दण्ड और अपमान।।

चीरहरण के समय में, जो बैठे हों मौन।
देख रहे, क्यों पूछते, पापी-दोषी कौन।।

महिलाएं, बच्चे, पुरुष, प्रकट कर रहे क्रोध।
उन्हें नहीं है ज्ञात कुछ, क्यों कर रहे विरोध।।

संविधान वअवृक्ष की, हरीतिमा गणतंत्र।
चिर अखंड भारत रहे, जन-गण-मन शुभ मंत्र।।

–117, आदित्य नगर, विकास नगर, लखनऊ

'सरस्वती' से

❑डॉ. कैलाश निगम

तम अज्ञता का भरा
मानस में
निज नेह से
अब्ब प्रकाश भरो।
बढ़ पाये नहीं
यहाँ झूठ के दानव
मातु समूल
विनाश करो।
कविता सदा
आपके इंगित पे
इससे परिपूरित
दास करो।
जननी तव वन्दना
गाता रहूँ
मम कण्ठ में
आकर वास करो।

–4/522, विवेक खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ

बसन्त

❑राघवेन्द्र शर्मा त्रिपाठी 'ब्रजेश'

रसिक रसाल कढ़ि मंजरी सोहान लागी
गान लागी कल कण्ठ कोयल सुढंग मैं।
खेतन मैं पीरी सरसों है दरसान लागी
भावती अमान लागी भावते के अंग मैं।
फूली कंज कलिका करन गंध दान लागी
भ्रमरावली त्यों पान लागी रस रंग मैं।
आवत बसन्त सुखमा यों सरसान लागी
सुख बरसान लागी प्रकृति उमंग मैं।।

पंचम के स्वर सुद्ध सने
कल कानन कोकिल के कुल कन्त हौ।
मूरछना श्रुति तान तरंग
अलापत भौंरन के गुन गन्त हौ।
बैनन नैनन बीच ब्रजेश
सुग्रामन मैं लय लेत लसन्त हौ।
स्वाद औ सौरभ तैं अस को तुम
राग बसन्त की बाग बसन्त हौ।।

(ब्रजेश विनोद से)

हर्ष-चतुष्पदी

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

ऐसी आज न जाने क्या बात है।
कोटा जल का शरीर में इफरात है।।
चन्द्रप्रभा वटी बीसों साल से-
अविरल लेने से मिलरहा निजात है।

आपके पिताश्री अपने समय के पहुँचे वैद्य थे।
पर क्यों आज आपसब ऐलोपैथ के पास जाते है?
अब तो निःसन्तानता कोई अभिशाप नहीं-
अब बंजर भूमि में भी जंगल लहलहाते हैं।।

–अजय मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी गीत

आदमी को प्यार दो...

❑गोपाल दास 'नीरज'

सूनी सूनी जिन्दगी की राह है,
भटकी भटकी हर नजर-निगाह है,
राह को सँवार दो,
निगाह को निखार दो,
आदमी हो तुम कि उठो आदमी को प्यार दो,
दुलार दो।
रोते हुए आँसुओं की आरती उतार दो।

तुम हो एक फूल कल जो धूल बनके जायेगा,
आज है हवा में कल जमीन पर ही आयेगा,
चलते वक्त बाग बहुत रोयेगा-रुलायेगा,
खाक के सिवा मगर न कुछ भी हाथ आयेगा,
जिन्दगी की खाक लिये हाथ में,
बुझते-बुझते सपने लिये साथ में,
रुक रहा हो जो उसे बयार दो,
चल रहा हो उसका पथ बुहार दो,
आदमी हो तुम कि उठो आदमी को प्यार दो,
दुलार दो।

जिन्दगी यह क्या है बस सुबह का एक नाम है,
पीछे जिसके रात है और आगे जिसके शाम है,
एक ओर छाँह सघन, एक ओर घाम है,
जलना-बुझना, बुझना-जलना सिर्फ जिसका काम है,
न कोई रोक-थाम है,
खौफनाक-गारो-बियाबान में,
मरघटों के मुरदा सुनसान में,
बुझ रहा हो जो उसे अँगार दो,
जल रहा हो जो उसे उभार दो,
आदमी हो तुम कि उठो आदमी को प्यार दो,
दुलार दो।

जिन्दगी की आँखों पर मौत का खुमार है,
और प्राण को किसी पिया का इन्तजार है,
मन की मनचली कली तो चाहती बहार है,
किन्तु तन की डाली को पतझर से प्यार है,
करार है,
पतझर के पीले-पीले वेश में,
आँधियों के काले-काले देश में,
खिल रहा हो जो उसे सिँगार दो,
झर रहा हो जो उसे बहार दो,
आदमी हो तुम कि उठो आदमी को प्यार दो,
दुलार दो।

प्राण एक गायक है, दर्द एक तराना है,
जन्म एक तार है जो मौत को बजाना है,
स्वर ही रे! जीवन है, साँस तो बहाना है,
प्यार एक गीत है जो बार-बार गाना है,
सब को दुहराना है,
साँस की सिसक रही सितार पर,
आँसुओं के गीले-गीले तार पर,
चुप हो जो उसे जरा पुकार दो,
गा रहा हो जो उसे मल्हार दो,
आदमी हो तुम कि उठो आदमी को प्यार दो,
दुलार दो।

एक चाँद के बगैर सारी रात स्याह है,
एक फूल के बिना चमन सभी तबाह हैं,
जिन्दगी तो खुद ही एक आह है कराह है,
प्यार भी न जो मिले तो जीना फिर गुनाह है,
धूल के पवित्र नेत्र-नीर से,
आदमी के दर्द, दाह, पीर से,
जो घृणा करे उसे बिसार दो,
प्यार करे उस पै दिल निसार दो,
आदमी हो तुम कि उठो आदमी को प्यार दो,
दुलार दो।
रोते हुए आँसुओं की आरती उतार दो।

(प्राण-गीत से)

राजस्थान-समाचार

पंजाबी समाज ने शिक्षण सामग्री वितरित की

कोटा, ११ फरवरी। पंजाब जन सेवा समिति के तत्वावधान में श्री अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय, विनोवा भावे नगर, कोटा में शिक्षण सामग्री-स्कूल बैग, पेन, पेंसिल, रबर, कटर आदि वितरित किए। विद्यालय की ओर से अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डीएवी कोटा की प्राचार्या सरिता रंजन गौतम थीं। इस अवसर पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि मनुष्य और पशुओं में केवल विवेक का अंतर है। मनुष्य विवेकशील होता है अतः बच्चों को अपनी बुद्धि को ज्ञान प्राप्ति में लगाकर सच्चे मानव बनें। आप सभी यह संकल्प लें कि हम पढ़ाई पूरी करके ही स्कूल छोड़ेंगे। अपने ज्ञान का उपयोग दूसरे की भलाई में करेंगे।

कार्यक्रम का शुभारंभ डीएवी के धर्मशिक्षक शोभाराम ने मंत्रोच्चार के साथ किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पंजाबी जन सेवा समिति के अध्यक्ष श्री अर्जुन देव चड्ढा ने कहा कि हम ऐसे कार्यक्रम भिन्न-भिन्न राजकीय स्कूलों में जाकर करते रहते हैं। ऐसा करना, विशेष रूप से बच्चों के बीच जाना मुझे बहुत अच्छा लगता है। आप आपने गुरुओं की बातों का पालन कर अच्छे इंसान बनें।

विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती सुनीता सोनी ने धन्यवाद देते हुए कहा कि आप सभी अतिथियों ने जो भी ज्ञानवर्द्धक बातें बच्चों को बताई हैं हमारे छात्र उनका पालन कर अपने जीवन को अच्छा बनायेंगे ऐसा मेरा विश्वास है। असप सभी के सहयोग हेतु आभार व्यक्त करती हूँ। कार्यक्रम का संचालन शिक्षिका दीपा कपूर ने किया। *(शम्मी कपूर, संयुक्त सचिव)*

आर्य समाज कोटा ने कपड़े के थैले वितरित किए

कोटा, २८ जनवरी। पर्यावरण शुद्ध करने के लिए यज्ञ व वृक्षारोपण अति आवश्यक है। आर्य समाज द्वारा इस दिशा में निरंतर कार्य किया जा रहा है। उक्त विचार कोटा के पूर्व महापौर सुमन शृंगी ने आर्य समाज द्वारा आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये। आर्य समाज राजस्थान के प्रांतीय प्रचार प्रभारी अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि कपड़े के थैलों को उपयोग में लावें। प्लास्टिक की थैलियों को कचरे में खाने से जानवर मौत का ग्रास बन रहे हैं। शिक्षाविद् डॉ. सुदेश आहूजा ने कहा कि सिंगल यूज प्लास्टिक के विरुद्ध व कपड़े व जूट के थैलों को उपयोग में लेने के प्रति और अधिक जागरूकता की आवश्यकता है। आर्य समाज कोटा ने कपड़े व जूट के थैलों के उपयोग का जागरूकता अभियान चलाया और शॉपिंग सेन्टर में जूट व कपड़े के थैले बांटे। कार्यक्रम में श्रीमती सुनीता व्यास, पूर्व पार्षद रमेश आहूजा, पूरनचन्द मित्तल, राजेन्द्र मुनि आर्य, वाइ.आर.कुमरा, राम प्रसाद याज्ञिक, लालचंद आर्य, भैरूलाल आर्य, शम्मी कपूर, एस.एन.कर्णावत, रामनारायण कुशवाह, दीपक दीप आदि उपस्थित थे। *(अर्जुनदेव चड्ढा)*

लखनऊ-समाचार

आर्य समाज इन्दिरा नगर

आर्य समाज इन्दिरा नगर के वर्ष २०२० के नव निर्वाचित पदाधिकारियों व सदस्यों की सूची इस प्रकार है-

श्रीमती कान्ति कुमार	प्रधान
श्रीमती शैलजा भटनागर	उपप्रधान
श्री मुकेश चन्द मित्तल	उपप्रधान
श्री डोरी लाल आर्य	मंत्री
श्रीमती सरिता श्रीवास्तव	उप मंत्री
श्री सुरेन्द्र कुमार निगम	उप मंत्री
श्री अभय मुनि	कोषाध्यक्ष
श्री चन्द्रिका दास	पुस्तकालयाध्यक्ष
डा.वेद प्रकाश (इं.)	अधिष्ठाता आ.वी.दल

श्री राजेश कुमार विरमानी आय-व्यय निरी. प्रतिनिधि जिला आर्य प्रतिनिधि सभा-श्री नवनीत निगम एवं श्री रामेन्द्र देव वर्मा।

प्रतिनिधि आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र.-डॉ.इन्द्रदेव गुप्ता एवं श्री जे.पी.आर्य।

अंतरंग सदस्य-सर्वश्री ओम कुमार सक्सेना, श्रीमती सुशीला वार्ष्णेय, राम गोविन्द ठाकुर, संसार नाथ शर्मा, गंगाराम आर्य, अक्षय भाई, श्रीमती रागिनी सक्सेना, श्रीमती कुसुम वर्मा, श्रीमती सरोजनी आर्य, डा.नरेन्द्र कुमार, श्रीमती आनन्दा कुमारी, श्रीमती शैल कुमारी, श्रीमती मनवासा राय, प्रमोद प्रकाश गोयल, श्रीमती सरिता सिंह, श्रीमती कुसुम सिंह, गौरव कुमार अग्रवाल, श्रीमती नितिका अग्रवाल, देवाजी श्रीवास्तव। *(मंत्री, आर्य समाज)*

प्रमोद कुमारी जी अस्वस्थ

'आर्य लोक वार्ता' की अनन्य सहयोगी, सहृदयता की प्रतिमूर्ति, वैदिक भजनों की गायिका, श्रद्धामयी होता सदस्या, 'प्रमोद-गीतांजलि' की रचयिता श्रीमती प्रमोद कुमार जी सम्प्रति अस्वस्थ हैं। 'आर्य लोक वार्ता' परिवार प्रमोद कुमारी जी के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हेतु ईश्वर के प्रार्थना करता है।

लखनऊ-समाचार

सुप्रीम कोर्ट में रामजन्मभूमि केस की पैरवी करने वाले जस्टिस तिलहरी का निधन

इलाहाबाद हाई कोर्ट के अवकाश प्राप्त जस्टिस हरिनाथ तिलहरी (८१) का निधन हो गया। सेवानिवृत्त होने के बाद बतौर वरिष्ठ अधिवक्ता उन्होंने अयोध्या राम जन्मभूमि के मुकदमे में मंदिर पक्ष की ओर से सुप्रीम कोर्ट में पैरवी की थी। राजधानी के न्यायिक क्षेत्र से जुड़े लोगों ने उनके निधन को अपूरणीय क्षति बताया है। जस्टिस तिलहरी ने वर्ष १९९७ में तीन तलाक के खिलाफ पहला फैसला दिया था। इससे पहले वर्ष १९९३ में उन्होंने हिन्दू श्रद्धालुओं को राम जन्मभूमि दर्शन की अनुमति के साथ ही मूर्तियों व ढहाए गए ढांचे की ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व वाली सामग्री सुरक्षित रखने के निर्देश दिये थे। अन्य कई संवैधानिक व सामाजिक मामलों में भी उन्होंने अहम फैसले दिए थे।

वर्ष १९३९ में चारबाग इलाके में जन्मे तिलहरी ने लखनऊ विश्वविद्यालय से विधि स्नातक की पढ़ाई के बाद १९६१ में वकालत शुरू की। १९९२ में वे इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज बने। उनके बड़े पुत्र न्यायमूर्ति रविनाथ तिलहरी हाई कोर्ट में न्यायाधीश हैं। दूसरे पुत्र शिवनाथ तिलहरी हाईकोर्ट में राज्य सरकार के अपर शासकीय अधिवक्ता प्रथम हैं। पुत्री सुनीता तिलहरी अधिवक्ता और जिला उपभोक्ता फोरम कानपुर की सदस्य हैं।

तिलहरी जी का असमय निधन बेहद दुखद

-डॉ.वेद प्रकाश आर्य

स्व.हरिनाथ तिलहरी लखनऊ विश्वविद्यालय में मेरे सहाध्यायी थे। वे विधि संकाय में अध्ययन करते थे और मैं कला संकाय में। १९५९ में जब लखनऊ विश्वविद्यालय से हिन्दी प्रचारार्थ एक छात्र दल का चयन किया गया- तो तिलहरी जी भी हमारे साथ में थे। गुरुवर डॉ.देवकीनन्दन श्रीवास्तव 'नन्दन' के वे प्रिय पात्र थे। हमलोग दक्षिण भारत में केरल के विभिन्न क्षेत्रों में साथ भ्रमण करते रहे तथा त्रिवेन्द्रम विश्व विद्यालय में हमलोगों ने हिन्दी में अपना प्रचार कार्यक्रम प्रस्तुत किया था, जिसका सभी ने स्वागत किया था। तिलहरी जी उन दिनों पं.जवाहरलाल नेहरू के भारी प्रशंसक थे और उन्हीं की शैली में भाषण भी करने की कोशिश करते थे। वे अत्यंत सहृदय मिलनसार, खुले मिजाज के हँसमुख व्यक्ति थे। बाद में भी उनसे मेरा सम्पर्क बना रहा। अचानक उनके निधन से मैं काफी आहत हूँ। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे।

माता शीलापाल की पुण्यस्मृति

मवाना (मेरठ) की ख्यातिलब्ध माता शीला पाल जी की पुण्यस्मृति एवं जयन्ती एक ही दिन मनाई जाती है। इस वर्ष भी दि.१३.०१.२०२० को योगाश्रम, अलीगंज में माता जी की पुण्यतिथि एवं १०४वीं जयन्ती श्रद्धा एवं भक्ति के साथ मनायी गयी। यज्ञ के अनन्तर माता जी के लोकोपकारी कार्यकलापों और सहृदय व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को याद किया गया। अम्मा जी के सुपुत्र श्री पाल प्रवीण, पुत्रवधू श्रीमती कमलेश जी के साथ ही परिवार के अन्यान्य सदस्य भी इस अवसर पर मौजूद थे और इस प्रसंग में आयोजित यज्ञ में सभी ने भाग लिया।

बताते चलें, माता शीलापाल का जन्म सन् १९१६ को एक सम्भ्रान्त परिवार में हुआ था, उनके पिताजी का नाम लाला जगलाल जी था। वे मुजफ्फरनगर में असाधारण व्यक्तित्व के स्वामी थे। सन् १९३३ में उनका विवाह उच्च शिक्षा प्राप्त श्री प्रियपाल जी के साथ हुआ था। शीला पाल जी को में प्रारंभ से ही देशसेवा और समाज सुधार में गहरी दिलचस्पी थी। उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलनों में बढ़चढ़ कर भाग लिया, समाज सुधार के कार्यों को आगे बढ़ाया। श्री प्रियपाल जी के महान कार्यों का श्रेय शीला पाल को दिया जाना चाहिए। साहित्यिक कार्यक्रमों का उन्होंने संचालन किया। साहित्य और संगीत उनके प्रिय विषय थे। माता जी के व्यक्तित्व की झलक उनके पुत्रों- श्री पाल प्रवीण, कर्नल पाल प्रमोद तथा पुत्रियों श्रीमती मिनी स्वरूप और श्रीमती मधुर भण्डारी में देखी जा सकती है। १९८९ को ७३ वर्ष की आयु में आपका निधन हो गया था-

माता शीला पाल का उन्नत शील स्वभाव।
अंकित जन जन हृदय पर उसका अमिट प्रभाव।।

आर्य्य लोक वार्ता

'ऋत्विक्-मंडल'

(प्रतिवर्ष 1500 रु. या अधिक सहयोगकर्त्ता)

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, ज्वालापुर, हरिद्वार; विद्यासागर फाउण्डेशन, मेरठ; श्री अम्बिका प्रसाद एडवोकेट, लखनऊ; श्री आनन्द कुमार आर्य, टाण्डा, अम्बेडकरनगर; श्री पाल प्रवीण, अलीगंज, लखनऊ; श्रीमती कमलेश पाल, अलीगंज, लखनऊ; श्रीमती प्रमोद कुमारी, अलीगंज, लखनऊ; श्री अभिषेक, अलीगंज, लखनऊ; श्रीमती गीतांजलि, अलीगंज, लखनऊ; श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली; कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ; श्री अरविन्द कुमार, आर्कीटेक्ट, गोमती नगर, लखनऊ; श्रीमती शालिनी कुमार, आर्कीटेक्ट, गोमती नगर, लखनऊ; डॉ.प्रशिषा, प्रधानाचार्या, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज, टाण्डा, अम्बेडकरनगर; श्रीमती मधुर भंडारी, नई दिल्ली; श्री पीयूष गुप्त, सिंगापुर; श्रीमती प्रकाश अग्रवाल, बरेली; डॉ.सी.वी.पाण्डेय, सर्वोदय नगर, इन्दिरा नगर, लखनऊ; श्रीमती प्रमिला पाल, मवाना, मेरठ; श्री दीपक कुमार दर्शन, लखनऊ; श्री बी.एन.टण्डन, बहराइच; श्री अनूप टण्डन, मेरठ; डॉ.वेद प्रकाश बटुक, मेरठ; श्री नरेन्द्र भूषण, जानकीपुरम, लखनऊ; श्री आर. सी. यादव, इन्दिरा नगर, लखनऊ; चौधरी रणवीर, प्रधान, आर्य समाज, सीतापुर; श्रीमती मनीषा त्रिवेदी, दुबई; श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा, राजस्थान; श्री नरसिंह पाल एडवोकेट, लखनऊ; श्रीमती मीना दीक्षित, गोमती नगर, लखनऊ; इं.जे.पी.अग्रवाल, गायत्रीलोक, कनखल, हरिद्वार; श्रीमती प्रियदर्शिनी मित्तल, बंगलौर; श्री आर. के.शर्मा, जानकीपुरम, लखनऊ; श्री बाँके बिहारी 'हर्ष', अवध मोटर वर्क्स, फैजाबाद; श्रीमती रामा आर्य 'रमा', नेवाजगंज, लखनऊ; श्रीमती मालती त्यागी, गोमती नगर, लखनऊ; श्रीमती कृष्णा बजाज, बरेली; श्रीमती प्रियंका शर्मा, जानकीपुरम, लखनऊ; महात्मा प्रेममुनि, आर्य समाज, हसनगंज पार, लखनऊ; श्रीमती अनीता सिंह, प्रिंसिपल, डी.ए.वी.एकेडमी, टाँडा, अम्बेडकरनगर; श्रीमती वेद रतना खत्री, हिन्द नगर, आलमबाग, लखनऊ; श्री आत्म प्रकाश बत्रा, आर्य समाज, आदर्श नगर, लखनऊ; श्री विश्वमित्र शास्त्री, आर्य समाज, अलीगंज, कुर्सी रोड, लखनऊ; श्री रण सिंह, आर्य समाज, चन्द्र नगर, लखनऊ; श्री रवीन्द्र त्यागी, गोमती नगर, लखनऊ; श्री महेशचन्द्र द्विवेदी, विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ; श्रीमती कुमुद गुप्ता, अलीगंज, लखनऊ; आचार्य आनन्द मनीषी, राजाजीपुरम, लखनऊ; श्रीमती यशोदा शर्मा, जानकीपुरम्, लखनऊ; श्री कृष्ण स्वरूप चौधरी, गोमती नगर, लखनऊ; श्रीमती सुधा चौधरी, गोमती नगर, लखनऊ; डॉ.सत्यकाम आर्य, जानकीपुरम, लखनऊ; श्री प्रदीप कुमार श्रीवास्तव एडवोकेट, निशात गंज, लखनऊ; श्री अरुण अमिता विरमानी, चन्द्रनगर, लखनऊ; डॉ.मनोरमा तिवारी, अलीगंज, लखनऊ; श्री राम प्रसाद श्रीवास्तव, गोमती नगर, लखनऊ; श्री निशीथ कंसल, विवेकानन्द पुरी, लखनऊ; डॉ.भानु प्रकाश आर्य, लखनऊ; कर्नल चन्द्रमोहन गुप्त, अलीगंज, लखनऊ।

टाण्डा-समाचार

आर्य समाज टाण्डा में भव्य समारोह

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज के पावन जन्मदिवस के अवसर पर आर्य समाज टाण्डा द्वारा आयोजित समारोह १८ से २१ फरवरी २०२० तक उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर वैदिक विद्वान् आचार्य विश्वव्रत शास्त्री (आर्ष गुरुकुलम्, जानकीपुरम, लखनऊ) द्वारा वैदिक सिद्धान्तों पर सारगर्भित प्रवचन होते रहे तथा आचार्य सत्य प्रकाश आर्य (बाराबंकी) एवं श्री संजय सत्यार्थी (बिहार) के सुमधुर एवं ओजस्वी भजनोपदेश हुए। आचार्य विश्वव्रत ने वेद पारायण यज्ञ का संचालन, निर्देशन एवं आचार्यत्व किया जिसका जनता पर विशेष प्रभाव पड़ा।

समारोह का शुभारम्भ १८ फरवरी को महर्षि जन्म दिवस से हुआ जिसका आयोजन आर्य समाज के प्रधान कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य के गृह पर विशेष कार्यक्रम से हुआ। सारे घर और परिसर को प्रकाश की व्यवस्था से सुसज्जित किया गया। टाण्डा-वासियों का उत्साह देखते ही बनता था।

लखनऊ-समाचार

अज्ञानान्धकार को चीरती हुई एक प्रकाश किरण

आर्य समाज की विशाल शोभा यात्रा

आये दिन बढ़ते हुए अज्ञान, ढोंग, पाखण्ड, तथा ईश्वर पूजा के नाम पर

व्यक्तिपूजा, जड़पूजा एवं तांत्रिक क्रियाओं के जाल को छिन्न भिन्न कर विशुद्ध वैदिक ज्ञान की शिक्षाओं के प्रकाश की किरणों को बिखेरते हुए देश की एकमात्र सामाजिक सुधारों की अलख जगाने वाली संस्था आर्य समाज के तत्वावधान में नवजागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज के बोधपर्व- शिवरात्रि के उपलक्ष्य में विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जो श्रीमद्दयानन्द बाल सदन मोती नगर से २ बजे अपराह्न प्रारंभ हुई तथा डी. ए.वी.कालेज, नाका हिंडोला, गणेश गंज, अमीनाबाद, महिला कालेज होती हुई गंगाप्रसाद रोड स्थित स्वनामधन्य नगर आर्य समाज रकाबगंज में सायं ४ बजे समाप्त हुई।

शोभायात्रा का नेतृत्व आचार्य नवनीत निगम, प्रधान, जिला आर्य सभा लखनऊ एवं श्री अजय कुमार श्रीवास्तव, प्रधान नगर आर्य समाज, प्रबोध सागर आर्य, मंत्री जिला सभा, रीतेश रस्तोगी, मंत्री नगर आर्य समाज कर रहे थे। शोभायात्रा में बढ़ी संख्या में आर्य समाजों के प्रतिनिधिगण, आर्य महिलाएँ आगे आगे पैदल चल रही

थीं तथा छात्रों की टोलियाँ पंक्तिबद्ध मार्च कर रही थीं। शोभायात्रा की गौरव गरिमा में अभिवृद्धि कर रहे थे- आचार्य आनन्द मनीषी, श्रीमती वीना उतरेजा, श्रीमती आशा अग्रवाल, श्रीमती रामा आर्य 'रमा', श्री विद्यासागर बग्गा, श्री हरीश निझावन, श्री रामेन्द्र वर्मा, श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, श्री रमेश चन्द्र आर्य, डा.सत्यकाम आर्य, राजीव बत्रा, डा.भानु प्रकाश आर्य, श्री ईश्वर मुनि जी, श्री विमल किशोर, श्री मुरारी आर्य, श्री प्रत्यूष रत्न पाण्डे, कवि श्रीशरत्न पाण्डे। आर्य समाज चन्द्र नगर द्वारा अनवरत प्रसाद वितरण किया गया। आर्य समाज महावीर गंज अलीगंज द्वारा भजनोपदेश का कार्यक्रम चलता रहा। आर्य समाज चन्द्र नगर की ८० वर्षीया वयोवृद्धा माता बलवंत खुराना का उत्साह देखने लायक था। पूरी शोभायात्रा में पुलिस प्रशासन की व्यवस्था चुस्त दुरुस्त थी।

शोभायात्रा का प्रारम्भ होने से पूर्व बाल सदन द्वारा प्रसाद वितरण किया गया। आचार्य सन्तोष वेदालंकार एवं प्रेममुनि जी द्वारा वेदमंत्रों का पाठ करके शोभायात्रा का शुभारंभ किया गया। बाल सदन के बच्चों एवं उनके शिक्षकों द्वारा पूरे रास्ते वेदमंत्रों का गान किया गया। रास्ते में आर्य समाज कैसरबाग सहित अनेक आर्य जनों द्वारा जलपान एवं माल्यार्पण करके स्वागत किया गया। शोभायात्रा के नगर आर्य समाज पहुंचनेपर नगर आर्य समाज के प्रधान श्री अजय आर्य, मंत्री रितेश रस्तोगी, 'आर्य लोक वार्ता' के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य द्वारा अभिनन्दन किया गया। शोभायात्रा के सफल आयोजन में सर्वश्री मनीष आर्य, यतेन्द्र आर्य, प्रत्यूष रत्न, अतुल आर्य, अनिल आर्य, राजेश आर्य का सराहनीय योगदान रहा।

(सं.सू.-आनन्द चौधरी)

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिवस समारोह

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस समारोह दि. १२.०२.२०२० को

सायंकाल ०५ से ८.३० बजे तक जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में इंदिरा नगर आर्य समाज, ०१ वैशाली इन्क्लेव, सेक्टर-९, पानी की टंकी के पास, लखनऊ में सोल्लास मनाया गया। श्री सुरेन्द्र निगम के आचार्यत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। महर्षि के स्मृति चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए इस अवसर पर- डॉ.निष्ठा विद्यालंकार, श्री नवनीत निगम प्रधान जिला सभा, श्रीमती कान्ति कुमार प्रधान आर्य समाज इन्दिरा नगर, श्री प्रबोध सागर आर्य मंत्री जिला सभा, श्रीमती शैलजा भटनागर, श्री मुकेश चन्द्र मित्तल उपप्रधान आर्य समाज इन्दिरा नगर इत्यादि ने अपने उद्‌बोधक विचार व्यक्त किये। आयोजन में मुख्य अतिथि थे श्री महेश चन्द्र द्विवेदी, पूर्व पुलिस महानिदेशक, उ.प्र.। श्री डौरी लाल आर्य मंत्री आर्य समाज इन्दिरा नगर ने कार्यक्रम का संयोजन किया।

महर्षि दयानन्द जयन्ती पर ऋषि भंडारा

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की १६५वीं जयन्ती आर्य समाज चन्द्रनगर के तत्वावधान में सोल्लास मनायी गयी। इस अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम- ऋषि-भण्डारा आर्य समाज द्वारा संचालित किया गया; जिसके अन्तर्गत विना भेदभाव के क्षेत्र के सैकड़ों नर-नारियों को भोजन कराया गया। इस आयोजन का जनता पर भारी प्रभाव पड़ा। इस आयोजन को सम्पन्न कराने में श्रीमती अमिता विरमानी, श्रीमती पूनम छावड़ा, श्रीमती संगीता मल्होत्रा, विद्या सागर बग्गा, दिनेश बाधवा, अनिल आर्य का सराहनीय योगदान रहा।

आर्य समाज आदर्श नगर का वार्षिक समारोह

आर्य समाज आदर्श नगर, आलमबाग का ५७वाँ वार्षिक उत्सव एवं महर्षि

दयानन्द सरस्वती का १६५वाँ जन्मदिवस समारोह दि. ३०. ०१.२० से ०२.०२.२० आर्य समाज मंदिर में मनाया गया। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य वीरेन्द्र वैदिक (सहारनपुर) एवं भजनोपदेशक सतीश सत्यम् (दिल्ली) के वेदोपदेश एवं भजनोपदेश नित्य प्रति प्रातः एवं सायंकालीन सत्रों में होते रहे। क्षेत्र की जनता ने मनोयोग पूर्वक उनके उपदेशों एवं संगीत को सुना तथा उससे प्रेरणा प्राप्त की। सभी कार्यक्रमों का गीतात्मक लयबद्ध संचालन श्री सतीश निझावन (पूर्व मंत्री) द्वारा किया गया तथा आर्य समाज के लिए समर्पित श्री आत्म प्रकाश बत्रा ने संयोजन का सराहनीय दायित्व निभाया।

बाहर से पधारे हुए विद्वानों के साथ ही यज्ञ के ब्रह्मा पं.सन्तोष कुमार वेदालंकार को दक्षिणा, स्मृति चिन्ह आदि से सम्मानित किया गया। आचार्य आनन्द मनीषी, पं. प्रताप कुमार साधक, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री नवनीत निगम एवं मंत्री श्री प्रबोध सागर जौहरी को पुष्पमालाओं से समादृत किया गया। आर्य समाज के सेवक को भी सम्मानित करने में आर्य समाज के अधिकारियों ने कोई कोताही नही की। वार्षिकोत्सव की विशेषता यह रही कि आर्य समाज की दो विभूतियों- श्री सतीश निझावन (पूर्व मंत्री) वरिष्ठ सदस्य कर्नल ओमप्रकाश वर्मा को भी सम्मान प्रदान किया गया। जिला सभा के प्रधान नवनीत निगम ने सभा की योजनाओं की जानकारी दी। इस अवसर पर श्री प्रबोध सागर जौहरी, मंत्री तथा श्री राजीव बत्रा, कोषाध्यक्ष भी मौजूद थे। आर्य समाज आदर्श नगर के प्रधान श्री हरीश निझावन ने धन्यवाद प्रकाश किया तथा कार्यवाहक मंत्री सुश्री विजयारानी भटनागर ने आभार प्रदर्शन किया। आरती गायन एवं शान्तिपाठ ने इस आयोजन को पूर्णता प्रदान की।

स्वाध्यायशीला शशि तलवार पुरस्कृत

आर्य समाज के वार्षिक उत्सव में स्वाध्याय की महत्ता को स्थापित करते हुए

समाज की सदस्या सुश्री शशि तलवार को पुरस्कृत किया गया। यह पुरस्कार 'आर्य लोक वार्ता' के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य, आर्य समाज के प्रधान श्री हरीश निझावन एवं स्वाध्याय केन्द्र के अध्यक्ष श्री आत्म प्रकाश बत्रा ने प्रदान किया।

बताते चलें कि स्वाध्याय के लिए समर्पित हिन्दी मासिक 'आर्य लोक वार्ता-प्रश्नोत्तरी-१' जो जून २०१६ में प्रकाशित हुई थी, जिसका सही हल आर्य लोक वार्ता जुलाई अंक में छपा था। प्रश्नोत्तरी-१ की विजेता थीं- श्रीमती शशि तलवार, आर्य समाज आदर्श नगर। आर्य लोक वार्ता की प्रश्नोत्तरी-१ में एक पांच वर्षीय बालक चीकू का चित्र है जो अपनी वृद्धा नानी को वाकर से चलने में सहायता कर रहा है। बालक का असली नाम वेदांश वाजपेयी है और लामार्ट में नर्सरी का छात्र है। जनहित में पुरस्कृत चित्र को पुनः प्रकाशित कर रहे हैं।

नगर आर्य समाज रकाबगंज का वार्षिकोत्सव

नगर आर्य समाज, रकाबगंज, लखनऊ का १२६वाँ वार्षिकोत्सव २१ से २३ फरवरी, २०२० तक समारोह पूर्वक मनाया गया। आचार्य विद्यादेव जी (नोएडा) तथा आचार्या प्रियंका आर्य (भरतपुर) के प्रवचनों एवं भजनों ने उत्सव को ऊँचाइयों तक पहुँचाया। प्रतिदिन प्रातःकाल यज्ञ में ब्रह्मा का आसन डॉ.(श्रीमती) निष्ठा विद्यालंकार ने सुशोभित किया।

(श्रीमती राधा केसरवानी)

गोण्डा-समाचार

आर्य उपप्रतिनिधि सभा गोण्डा-बलरामपुर

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज के बोध दिवस शिवरात्रि पर्व पर जिला

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, गोण्डा-बलरामपुर द्वारा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी महाशय छोटेलाल हाता में समारोह आयोजित हुआ। सर्वप्रथम प्रभात फेरी के उपरान्त पुरोहित स्वामी माधव राम यती द्वारा सभा प्रधान शास्त्री विनोद आर्य के यजमानत्व में राष्ट्र रक्षा यज्ञ सम्पन्न हुआ। तदुपरान्त एक संगोष्ठी समाजसेवी धर्मवीर आर्य की अध्यक्षता में हुई। संगोष्ठी में जिला आर्य समाज के प्रधान शास्त्री विनोद आर्य ने कहा- समजा में व्याप्त रूढ़ियों और आडम्बरों को मिटाने हेतु महर्षि ने अनेकों शास्त्रार्थ करके सत्य सनातन वैदिक धर्म की पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई, जिससे सच्चे धर्म का प्रकाश हुआ और वही प्रकाश आर्य समाज के रूप में विश्व पटल में विख्यात है।

इस अवसर पर आनन्द उपमन्यु, रमाकान्त मिश्र, सत्य प्रकाश आर्य, धर्मेन्द्र कुमार, साकेत भूषण तिवारी, मयंक सरन, मनोज कुमार, तृप्ति आर्या, डॉ.प्रज्ञा आर्या, डा.सी.डी.सिंह, योगी प्रसाद, अशोक रस्तोगी, शिव कुमार सोनी, डॉ.रमेश मौर्य, दिनेश शर्मा, अमर दीक्षित, जनार्दन पाठक, अजय दीक्षित आदि स्थानीय आर्य समाजों के प्रतिनिधि शामिल हुए। सभा का संचालन श्री सूरत कुमार ने किया। *(प्रेमचंद शर्मा)*

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

संरक्षक एवं निर्देशक
कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-638/181डी,
शिवविहार कालोनी, पो.-सीमैप,
पिकनिक स्पाट रोड, लखनऊ-226015
9450500138

संपादक
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9651333679

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
: 7310119999

प्रचार प्रमुख
श्री प्रेम चन्द्र शर्मा
: 8799521631

नवोन्मेष
श्री कृष्णा जी

ई-मेल
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	1,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	15,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है–

बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC-BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं.–46900 1000 00651
खाते का प्रकार-बचत खाता

प्रतिष्ठापक

श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार

संरक्षक

डॉ.भानु प्रकाश आर्य, लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
श्री सर्वमित्र शास्त्री, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग

श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार

श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-2 हिमांशु सदन, 5-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

ग्राम ग्राम में नगर नगर में, 'आर्य्य लोक वार्ता घर-घर में